ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

पौष-माघ, संवत् नानकशाही 551

वर्ष 13 अंक 4 जनवरी 2020

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ

संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर

सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब- 143006

फोन : 0183-2553956-60

<u>एक्सटेंशन नंबर</u>

वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी
– प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर 7

प्रीति पैग़ंबर गुरू
–प्रो. पिआरा सिंघ पदम (दिवंगत) 12

सद्भावना के सूर्य : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी
–डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा 16

पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर' 20

महान बलिदानी, योद्धा और विद्वान : बाबा दीप सिंघ जी
–डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल 23

. . . भाई निगाहीआ सिंघ आलमगीर
–सिमरजीत सिंघ 25

परम आलौकिक रचना : श्री हरिमंदर साहिब
– डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ 29

तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब
–डॉ. बलबीर सिंघ 33

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बसंत राग बाणी में बसंत ऋतु का चित्रण
–डॉ. परमजीत कौर 36

चाबियों का मोर्चा
–डॉ. जगजीत कौर 39

सिध गोसटि : विचार व्याख्या
–डॉ. मनजीत कौर 43

ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ बाणी की इस पावन पउड़ी में प्राचीन काल से चली आ रही माघ महीने में तीर्थ-स्नान की परंपरा की पृष्ठभूमि में मनुष्य-मात्र को परमात्मा के सच्चे नाम-सिमरन का सहारा लेते हुए वास्तविक आत्मिक विकास के लिए गुरमति महामार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य-मात्र! तेरे लिए वास्तविक लाभ लेने का रास्ता यही है कि माघ के महीने में तू नेक जनों— गुरमुखों की संगत कर। उनसे मिलकर प्रभु-नाम के महत्त्व पर विचार कर। तू गुरमुखों के साथ परमात्मा के नाम की स्तुति रूपी धूल का स्पर्श कर। यही तेरा स्नान है। तू माघ माह में परमात्मा का नाम स्मरण कर और यह अपने तक ही सीमित न रख। परमात्मा द्वारा मिली इस अनमोल दात (वरदान) को आगे भी वितरित कर। यहां समझने योग्य विचार-बिंदु यह है कि गुरमति में अकेले में प्रभु-नाम-चिंतन करने की बजाय संगत में जाकर चिंतन-मनन करने का अधिक महत्त्व माना जाता है।

सतिगुरु पातशाह कथन करते हैं कि यह ऐसा कारगर ढंग है कि इससे मन पर चढ़ी हुई कई जन्मों में किए दुष्कर्मों की मैल उतर जाएगी और तेरे मन से अहंकार चला जाएगा। काम और क्रोध के नुकसानदेय विकारी भाव तुझ पर भारी (हावी) नहीं रहेंगे। न ही मोह तंग करेगा और लालच रूपी कुत्ता भी तुझे दर-दर नहीं भटकाएगा। सच्चे मार्ग पर चलने से तेरा अपना आत्मिक लाभ तो है ही, संसार भी तेरी शोभा का गुणगान करेगा। अठसठ तीर्थों के स्नान से प्राप्त किए जाने वाले जो पुन्य गणना में आते हैं वे जीवों पर दया-भाव प्रकट करने से स्वत: मिल जाते हैं अर्थात् माघ महीने में हे मनुष्य! तुझे हिंसक व्यवहार को छोड़ना होगा।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य को नेक-जनों की संगत प्रभु स्वयं प्रदान कर देता है वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है। जिनको अपना मूल स्रोत परमात्मा मिल गया, मैं उन पर सदके जाता हूं। माघ महीने में जिन पर पूरा गुरु कृपालु होता है वे भाग्यशाली लोग मात्र बाहरी स्नान से नहीं, बल्कि रूहानी स्नान करने से स्वच्छ होते हैं।

संपादकीय

मानवता का प्रकाश-स्तंभ

धर्म देश व समाज को सही दिशा प्रदान करने वाला प्रकाश-स्तंभ होता है। यदि धर्म की शिक्षा आदर्श और मानवतावादी होगी तभी आदर्श और मानवतावादी देश-समाज की सृजना हो सकेगी, नहीं तो मानवतावादी आदर्शों से खाली तथाकथित धार्मिक विचारधारा हमेशा ही देश को रसातल की तरफ ले जाने का कारण बनती रहेगी। शायद यही कारण है कि हिंदोस्तान में हज़ारों सालों से आदर्शहीन, अमानवतावादी, पक्षपाती और सांप्रदायिक समाज के फलने-फूलने का कारण ऐसे तथाकथित धार्मिक नेतृत्व की उपस्थिति ही थी।

श्री गुरु नानक पातशाह के आगमन से पहले भारतीय समाज में प्रचलित बहुत-सी दुश्वारियों में से विशेष रूप से यदि बात स्त्री की ही की जाये तो समाज में सबसे अधिक सम्मानजनक आदरणीय रुतबे की हकदार स्त्री उस समय भारतीय समाज में सती-प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के कारण पशुओं से भी बदतर ज़िंदगी जीने के लिए मजबूर थी। उसे केवल भोग-विलास की वस्तु ही समझा जाता था। इस पतन के अंश *''जुज महि जोरि छली चंद्रावलि''* और *''गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्र, लुभाइआ''* वाले घटिया किस्म नैतिक किरदार में से तलाशे जा सकते हैं।

गुरु साहिबान ने ऊंचे इख़लाक वाले आदर्श मानव और आदर्श समाज की स्थापना के लिए अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। श्री गुरु नानक देव जी ने रूहानी वचन *''सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान''* कह कर स्त्री का सत्कार करने की शिक्षा दी। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने सती-प्रथा का पुरज़ोर खंडन कर विधवा विवाह की प्रथा आरंभ की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने 'औरत ईमान' कह कर स्त्री के उच्च सम्मानित रुतबे को प्रकट किया। दसम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब से ऊंचे इख़लाक की शिक्षा मिली। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के वचन *''सिख पुत्र त्रिय सुता जानि आपने चित धरियै''* समाज के लिए उच्च इख़लाक की आदर्श मिसाल हैं। इसी ऊंचे इख़लाक की सैकड़ों मिसालों के साथ भरा पड़ा है सिक्खी का गौरवमयी इतिहास। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया द्वारा भारत की २२०० बहू-बेटियों को अहमद शाह अब्दाली से छुड़ा कर सुरक्षित घर-घर पहुंचाने के इतिहास को बड़े गर्व के साथ याद किया जाता है। पिछले दिनों श्री अमृतसर में कुछ मनचलों से किसी की बेटियों की आबरू को बचाते समय ज़ख़्मी हुए सिक्ख नौजवान की मिसाल गुरु साहिबान की उच्च नैतिक शिक्षाओं के कारण ही है।

इसके विपरीत देश के अलग-अलग हिस्सों में रोज़ाना घटित हो रही बेटियों की बेपती की घटनाओं ने देश को विश्व स्तर पर कलंकित किया है, जिस कारण स्त्री सुरक्षा के पक्ष से देश की साख नीचे गिरी है। इससे देश की तथाकथित सर्वश्रेष्ठ संस्कृति की हवा भी निकल गई है। काश! यदि कहीं गुरु साहिबान की रूहानी शिक्षाओं को नफ़रत की हदबंदियों से ऊपर उठ कर समूचे देश ने अपनाया होता तो आज देश की यह जरजरी और घिनौनी तसवीर देश के बाशिंदों को शर्मसार न करती। यदि देश में बेटियों के अपमान का मंजर इसी तरह प्रचंड होता गया तो देशवासी और देश से बाहर बसते भारतीय विश्व स्तर पर क्या मुंह दिखाएंगे? वे जिस

मुल्क में भी जाएंगे, लोग कहेंगे कि इन (भारतीयों) से बच कर रहो, क्योंकि ये उस देश के निवासी हैं जहां बेटियां-बहनें महफ़ूज़ नहीं। बेटियों की सुरक्षा को यकीनी बनाने के लिए जहां सख़्त कानून व्यवस्था की ज़रूरत है, वहीं लोगों के किरदार को ऊंचा उठाने के लिए गुरु साहिबान की उच्च नैतिक आध्यात्मिक शिक्षाओं का प्रचार भी बहुत ज़रूरी है। देश को इस बात का फख्र होना चाहिए था कि विश्व के जिस भी कोने में सिक्ख बसे हैं और गुरुद्वारा साहिबान स्थापित किये गए हैं, वहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रूहानी विचारधारा और सिक्खों के आदर्श व्यवहार एवं किरदार से शिक्षा लेकर बाकी समाज भी स्वस्थ बनेगा। हीन भावना की संकीर्ण सोच इस देश-हितकारी और मानवता-हितकारी घटनाक्रम को नफ़रत की निगाह से देख रही है।

भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'महान कोश' में 'गुरुद्वारा' की बहुत सुंदर परिभाषा अंकित की है। वे लिखते हैं— " . . . सिक्खों का गुरुद्वारा विद्यार्थियों के लिए स्कूल, आत्म-जिज्ञासा वालों के लिए ज्ञान-उपदेशक आचार्य, रोगियों के लिए शफ़ाख़ाना, भूखों के लिए अन्नपूर्णा, स्त्री जाति की आबरू सलामत रखने के लिए लौहमयी दुर्ग और मुसाफ़िरों के लिए विश्राम का स्थान है।"

जिस देश में ऐसे गुणों वाले लौहमयी दुर्ग गुरुद्वारा साहिबान को गिराया जाता हो, वहां आत्मिक विकास, मानसिक निरोगता, ख़ुशहाली और स्त्री जाति की इज़्ज़त रक्षा की कल्पना कैसे की जा सकती है? जहां विदेशी मुल्क पाकिस्तान में चिरकाल से बंद पड़े कई गुरुद्वारा साहिबान की इमारतों का नवनिर्माण करवा कर संगत के दर्शन के लिए खोला जा रहा है, वहीं अपने देश में ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान पर कब्ज़ा करना, विकास के नाम पर ढह-ढेरी कर देना सरकारों की नीति और नियत पर प्रश्न-चिह्न खड़े करता है। पिछले कुछ अरसे से लेकर पहले हरिद्वार में गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी साहिब, सिक्किम में गुरुद्वारा डांगमार साहिब और हाल ही में जगन्नाथपुरी उड़ीसा में गुरुद्वारा श्री मंगू मठ को नुकसान पहुंचाना बहुत ही निंदनीय है। यह सिक्ख हृदयों को पीड़ा पहुंचाने वाला बेहद भद्दा मज़ाक है; सिक्ख धर्म द्वारा मानवता के लिए धार्मिक और हर प्रकार की आज़ादी की ख़ातिर दी अथाह शहादतों से मुनकर होना है।

यहीं बस नहीं, पंथ-विरोधी ताकतों की तरफ से सोची-समझी साजिश के अंतर्गत स्कूलों-कालेजों में पढ़ाए जाते इतिहास के सिलेबस में मिलावट कर सिक्ख इतिहास के सुनहरी पन्नों को ईर्ष्या की कालिख से मैला करने के यत्न किये जा रहे हैं और अपने कुछ ज़र-खरीद आदमियों से सिक्ख इतिहास के ग्रंथों के बारे में निंदनीय प्रचार करवाया जा रहा है। ऐसे हालात में हमारा सभी का फ़र्ज़ बनता है कि अपने सिद्धांतों, परंपराओं तथा इतिहास के प्रति सचेत हों और अपने बच्चों को अपनी लासानी विरासत के साथ जोड़ें, तभी हम पंथ-विरोधी ताकतों का सामना करने के योग्य होंगे।

आज देश-समाज धार्मिक असहनशीलता और बेगानगी के माहौल के कारण रसातल की जिस चरम सीमा पर पहुंच चुका है, ऐसे समय में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सर्वधर्म समभाव से ओत-प्रोत परोपकारी, मानवतावादी, रूहानी विचारधारा ही रौशनी की किरण हो सकती है, क्योंकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही मानवता का प्रकाश-स्तंभ हैं।

—सतविंदर सिंघ फूलपुर
मो : ९९१४४-१९४८४

साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*- प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर**

सरबंसदानी, बादशाह दरवेश श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की नूरानी, अद्वितीय और अज़ीम शख़्सियत दुनिया के इतिहास में सबसे निराली और अतुल्य है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सब्र, सहज, आस्था, दृढ़ता, साहस और चढ़दी कला के अनूठे मुजस्समा थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश पटना साहिब, बिहार (मौजूदा तख़्त श्री पटना साहिब) में पौष सुदी सप्तमी, संवत् १७२३(१६६६ ई.) को श्री गुरु तेग़ बहादर जी और माता गुजरी जी के गृह में हुआ।

सतिगुरु जी ने संसार में अपने आगमन से संबंधित आत्म-कथा 'बचित्र नाटक' में इस तरह बयान की है :

मुर पित पूरब कीयसि पयाना॥
भांति भांति के तीरथि नाना॥
जब ही जात त्रिबेणी भए॥
पुंन दान दिन करत बितए॥१॥
तही प्रकास हमारा भयो॥
पटना सहर बिखै भव लयो॥

सतिगुरु जी ने मानवीय जामे (मानस-जन्म) में अपने आने का मनोरथ इस तरह बताया है :

याही काज धरा हम जनमं॥
समझ लेहु साधू सभ मन मं॥
धरम चलावन संत उबारन॥
दुसट सभन को मूल उपारन॥ (बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने सिक्खों सहित समुच्चय लोक को अकाल पुरख के साथ जुड़ने और परमात्मा को अपना ओट-आसरा समझने के लिए प्रेरित किया और ताड़ना की है :

जो हम को परमेसर उचरिहैं॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं॥
मो कौ दास तवन का जानो॥
या मै भेद न रंच पछानो॥ (बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सांसारिक जीवन हर पक्ष से करिश्माई और अचंभित करने वाला है। आप जी ने नौ वर्ष की आयु में अपने पिता जी को दूसरे धर्म, जिनके साथ उनके सैद्धांतिक मतभेद थे, की रक्षा की ख़ातिर कुर्बानी देने के लिए भेजा। श्री गुरु तेग़ बहादर जी की शहादत के पश्चात् १६७५ ई. में ९ वर्ष की आयु में आप जी को श्री गुरु नानक-ज्योति के दसवें वारिस के रूप में गुरुआई पर आसीन किया गया। ४२ वर्ष की आयु तक आपने श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा आरंभ किये सिक्ख धर्म के क्रांतिकारी दार्शनिक सिद्धांतों को तीव्रता और दिव्य कुशलता के साथ शिखर पर पहुंचाया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान जरनैल, उच्च कोटि के विद्वान, अज़ीम साहित्यकार, गुरबाणी संगीत के रसिया, सरबंसदानी, अमृत के दाते, भक्ति व शक्ति के मुजस्समे और मर्द-ए-मैदान थे। वे शस्त्र और शास्त्र के धनी, संत-

*भूतपूर्व प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९९१५८-०५१००

सिपाही, साहिब-ए-कमाल, मरद अगंमड़े, अमृत के दाते थे। हकीम अल्लाह यार खान योगी आप जी के बारे में इस तरह बयान करते हैं :

इनसाफ करे जी में जमाना तो यकीं है।
कहि दे गुरु गोबिंद का सानी ही नहीं है।

गुरमत मानव को आत्मिक और शारीरिक दोनों रूपों में बलवान बनाने का सिद्धांत है। गुरु जी के दरबार में ५२ कवि थे जो अपने समय के महान विद्वान थे। गुरु जी ने जापु साहिब, अकाल उसतत, ३३ सवैये, खालसा महिमा, गिआन प्रबोध, चंडी चरित्र (बड़ा), चंडी चरित्र (छोटा), चंडी दी वार, चौबीस अवतार, बचित्र नाटक, चरित्रो पाखयान, ज़फ़रनामा, हकायतां, शबद हजारे पा. १०वीं आदि पवित्र बाणियों का उच्चारण किया। सिक्ख धर्म की पांच ककारी रहित मर्यादा और सिक्खी स्वरूप निश्चित कर सिक्ख धर्म की समाज में 'तीसर मज़हब साज के' अलग और न्यारी पहचान कायम की। गुरु जी ने खालसा पंथ को इतना शक्तिशाली बना दिया था कि अब उसे किसी और देहधारी (मानव रूप में) गुरु की ज़रूरत नहीं थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरमत विचार-प्रणाली के अनुसार इसी आदर्श मानव को ख़ालसा का रूप दिया। उन्होंने १६९९ ई. से खालसा पंथ की सृजना कर स्वतंत्र और संपूर्ण मानव का आदर्श सामने रखा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तलवंडी साबो में अपने पिता गुरु नौवें पातशाह की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल कर आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को संपूर्ण किया। (यहां आजकल गुरुद्वारा लिखणसर साहिब, गुरु की काशी सुशोभित है।) यह महान कार्य संवत् १७६३ (१७०६ ई.) में संपूर्ण हुआ। इसी संपूर्ण श्री गुरु ग्रंथ साहिब को दक्षिण में नांदेड़ की धरती पर गुरु की पदवी कार्तिक सुदी दूज, संवत् १७६५ को दी, जहां आजकल तख़्त श्री हजूर साहिब सुशोभित है। नांदेड़ की धरती पर गुरु जी ने आगे के लिए सिक्खों के गुरु सदा के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब को शबद रूप में स्थापित कर दिया। दुनिया के धार्मिक इतिहास में यह एकमात्र विलक्षण तरह का कार्य था जब किसी धार्मिक ग्रंथ को गुरु की पदवी प्राप्त हुई हो। यह श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दिए शबद-गुरु के सिद्धांत का व्यवहारिक रूप में शिखर था। सचमुच ही यह एक धार्मिक इंकलाब का शिखर था।

गुरु साहिबान का किसी देश, इलाके, धर्म, जाति, नस्ल और कौम के साथ कोई विरोध नहीं था। वे तो सारे जगत को "*सभ महि जोति जोति है सोइ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ॥*" और "*एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई॥*"तथा "*जो दीसै सो तेरा रूपु॥*"के सिद्धांत के धारक थे। दशमेश पिता जी बुलंद आवाज़ में संसार को समझाते हैं— "*कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो॥ हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी मानस की जात सबै एकै पहिचानबो॥*" गुरु साहिबान का धर्म-युद्ध सर्वधर्म की रक्षा, परोपकार करने के अलावा गरीबों, अनाथों, कामगारों और स्त्री आदि के उत्थान, सम्मान, मानव-समानता एवं उच्च जीवन-मूल्यों के लिए था। यही कारण है कि समय के प्रसिद्ध मुसलमान पीरों, फकीरों, चौधरियों, जिन्होंने सत्य को पहचाना, ने हमेशा सतिगुरु जी

का साथ दिया और उनकी सत्य की शक्ति को पहचाना तथा प्रणाम किया। वे चाहे पीर भीखण शाह थे, चाहे पीर आरिफ ख़ान, चाहे साढौरा के पीर बुद्धू शाह थे, चाहे कोटला के चौधरी निहंग खान थे, चाहे नबी खान थे, गनी खान थे, चाहे सूबा-सरहिंद वज़ीर खान की पत्नी बेगम जैनुबनिशां थीं। ऐसी मुसलमान शख़्सियतों की संख्या अनगिनत है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा किये गए कार्यों की गिनती करना कठिन है। दुनिया के प्रसिद्ध विद्वान अपनी-अपनी राय गुरु साहिब के बारे में प्रकट करते हैं। श्री गोकुल चंद नारंग कहते हैं— ''गुरु जी ने चिड़ियों को शाही बाज़ों का शिकार करने की युक्ति सिखायी।'' मैकालिफ़ कहते हैं— ''आपने दबे-कुचले लोगों को संसार का प्रसिद्ध योद्धा बना दिया।'' लतीफ कहते हैं— ''जिस कार्य को उन्होंने हाथ में लिया, वह महान था।'' गार्डन कहते हैं— ''जनता की मुर्दा हड्डियों में ज़िंदगी की लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दौड़ायी।'' हिंदी-जगत के प्रसिद्ध विद्वान साहित्यकार डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं— ''जो कुछ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कर दिखाया, वह बहुत बड़ा चमत्कार था।'' वे और लिखते हैं कि ''धन्य है वह देश, जहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पैदा हुए थे। वे महान संत और महान योद्धा थे। उन्होंने इस देश की अपार शक्ति का उद्घाटन किया। उनको याद कर हम आज भी नयी प्रेरणा और शक्ति हासिल कर सकते हैं, हासिल कर भी रहे हैं। गुरु जी महान संत थे। परिस्थितियों ने उनको शस्त्र धारण करने की चुनौती दी थी। इतिहास के पंडितों ने बड़े आश्चर्य के साथ देखा है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अद्भुत चमत्कार कर दिखाया।''

मिर्ज़ा हकीम अल्लाह यार खान योगी गुरु साहिब के रुतबे के बारे में लिखते हैं कि याक़ूब को अपने पुत्र यूसुफ की जुदाई में उम्र भर रोना पड़ा, परन्तु गुरु जी जैसा सब्र, धैर्य, सहज, अटल और सबूरी वाला कोई नहीं हुआ, जिसने चार बेटे कुर्बान कर एक अश्रु भी नहीं बहाया।

अनेक ही देशी-विदेशी, अलग-अलग धर्म, विश्वास और भाषा वाले लेखकों, इतिहासकारों, साहित्यकारों एवं विद्वानों ने सतिगुरु जी की महानता, अनोखी, अज़ीम और अद्‌भुत, करिश्माई शख्सियत के बारे में लिखते हुए अपनी श्रद्धा और गहरे सम्मान का प्रकटावा किया है। गुरु साहिब ने गुरबाणी का यह सत्य *''उलाहनो मै काहू न दीओ ॥ मन मीठ तुहारो कीओ ॥''* संसार के सामने व्यवहारिक रूप से प्रकट कर दिखाया। निश्चय ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हमेशा-हमेशा समूचे लोक के लिए उच्चतम रौशनी-मीनार का कार्य करते रहेंगे॥ बस, *''कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु''* है।

गुरु जी को जीवन-काल में लगभग १४ जंग करने पड़े। पहली जंग भंगाणी और आखिरी जंग उन्होंने खिदराणे की ढाब (श्री मुकतसर साहिब) नामक स्थान पर लड़ी। चमकौर नामक स्थान पर उनकी जंग दुनिया के इतिहास में बेमिसाल और अद्वितीय थी। उन्होंने भूखे-प्यासे ४० सिंघों के साथ बहुत बड़ी दुश्मन की फ़ौज का मुकाबला किया। १७०५ ई. में खिदराणे की ढाब नामक स्थान पर उन्होंने मुट्ठी भर सिंघों के साथ मुग़ल

फ़ौज के दांत खट्टे किये। ये दोनों युद्ध संसार में सबसे अधिक असमतोल थे। इनमें गुरु जी ने सिद्ध कर दिया था कि एक-एक सिंघ अनगिनत दुश्मनों का दिलेरी के साथ सामना करने की शक्ति रखता है, जैसे कि उनके बारे में कहा गया है :

सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।

गुरु जी के दो बड़े साहिबज़ादे— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी चमकौर की जंग में शहीद हो गए। उनके छोटे दो साहिबज़ादे— बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी सरहिंद के सूबे द्वारा गिरफ़्तार कर नींव में ज़िंदा चिन कर शहीद किये गये और माता गुजरी जी सरहिंद के ठंडे बुर्ज में शहीद हो गए। सब कुछ कुर्बान हो जाने के बावजूद भी गुरु साहिब अटल, सहज और चढ़दी कला में रहे। उनका निशाना मुगलों के ज़ुल्म की जड़ें उखाड़ना था। माना जाता है कि ज़िला लुधियाना के नगर रायकोट में जब नूरा माही ने छोटे साहिबज़ादों के सूबा सरहिंद द्वारा नींव में ज़िंदा चिन कर शहीद कर देने की ख़बर दी तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने तीर की नोक से दूभ का पौधा उखाड़ कर कह दिया था कि अब मुगलों के ज़ुल्म की जड़ उखड़ गई है। चमकौर की जंग में पुत्रों और काफ़ी सिंघों के शहीद हो जाने के उपरांत पांच सिंघों द्वारा गुरु-रूप होकर गुरमते द्वारा किये हुक्म की पालना करते हुए गुरु साहिब चमकौर साहिब से चल कर माछीवाड़ा की धरती पर पहुंचे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दीना कांगड़ से औरंगजेब को फतह का पत्र लिखा जिसे 'ज़फ़रनामा' या 'फतह की चिट्ठी' कहा जाता है। इसमें गुरु जी ने औरंगजेब को लिखा कि "न तू धार्मिक है, न बहादुर है और न अच्छा राजनीतिज्ञ है। तूने कुरान की कसमें खाकर तोड़ी हैं। कुरान की शिक्षा के विपरीत मासूम बच्चों का कत्ल किया है। तू प्रजा के साथ नाइंसाफी करता है।" इस तरह उन्होंने औरंगजेब को धर्म और नैतिकता का उपदेश किया और साथ ही कहा कि "क्या हुआ अगर मेरे चार बच्चे शहीद हो गए हैं, मगर तेरे ज़ुल्म का मुकाबला करने के लिए अभी मेरा पांचवां नादी पुत्र खालसा तैयार है। उन्होंने बादशाह को लिखा कि जब सारे यत्न ख़त्म हो जाएं फिर कृपाण उठाना जायज होता है। उन्होंने कहा कि मैंने दुनिया के भले के लिए हक, सच की रक्षा के लिए कृपाण उठाई है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़सत॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत॥

(ज़फ़रनामा)

कार्तिक सुदी पंचमी, ७ कार्तिक, संवत् १७६५ के अनुसार ७ अक्तूबर, १७०८ ई. को आप अकाल पुरख द्वारा निश्चित किया फ़र्ज़ निभाने और कार्य सम्पन्न करने के उपरांत नांदेड़ की धरती को हमेशा-हमेशा के लिए पाक-पवित्र कर ज्योति-जोत समा गए। आज उस पवित्र स्थान पर तख़्त सचखंड, श्री हजूर, अबिचल नगर साहिब सुशोभित है।

गुरु साहिबान का सारा संघर्ष लोगों को ग़ैरत, गौरव, आत्मसम्मान, ज़मीर की आज़ादी, मानव-समानता, आत्माभिमान और सरदारी देने के लिए ही रहा। इस महान क्रांतिकारी सपने को साकार करने के लिए गुरु जी ने अपना समूचा परिवार ही

अटल सहज अवस्था में रहते हुए कुर्बान कर दिया और गुरबाणी के इस फरमान *''कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा॥ तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा॥''* एवं पहाड़ से भी बड़ी हिम्मत के साथ कह दिया कि हे अकाल पुरख पातशाहों के पातशाह! यह सब आपकी अमानत थी जो मैं आपको सौंप कर मुक्त हो गया हूं। धन्य-धन्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी! गुरु साहिबान ने अपनी या अपने परिवार की सरदारी या ज़र, जोरू, ज़मीन, धन-दौलत कमाने के लिए कुछ नहीं किया। आज हम अपने आप को गुरु साहिबान और महान शहीद सिंघ-सिंघणिओं के वारिस होने का दावा तो कर रहे हैं, दूसरी तरफ आत्म-परस्ती, परिवार-परस्ती, बहुत सारी धन-दौलत इकट्ठी करने और जैसे भी हो, अधिक से अधिक राजनीतिक शक्ति की प्राप्ति के लिए आपस में लड़ रहे हैं। कौम और लासानी राष्ट्रीय विरासत की किसी को समझ और फिक्र नहीं है। हमारी ऐसी हालत पर किसी ने अश्रु बहाते हुए ठीक ही लिखा है— ''किसको फिक्र है, कबीले का क्या बना? सभी लड़ रहे हैं कि सरदार कौन है और सबसे अधिक धनवान कौन है। अफ़सोस! अति दुखदायक! हमारा सारा जीवन ही दिखावे वाला *''जिन्ह मनि होरु मुखि होरु''* मक्कारी वाला ही है। हम ख़ुद-परस्ती की हवस के शिकार हो रहे हैं।

आज का भारत तथा हिंदोस्तान गुरु साहिबान द्वारा आरंभ की गई इंकलाबी लहर और गुरु साहिबान, साहिबज़ादों, गुरु-परिवारों, गुरु-प्यारों, अनगिनत सिंघों, सिंघणियों और नवयुवकों की बेमिसाल, अद्वितीय एवं आश्चर्यजनक कुर्बानियों के कारण ही अपनी संस्कृति, अस्तित्व, हस्ती, धर्म और सभ्याचार को बचा सका है।

आज भी हमारे मुल्क में नेकी और बदी की लड़ाई जारी है। बदी की ताकतें देश में प्रभावशाली होती जा रही हैं। हर क्षेत्र में छल, कपट, धोखा और भ्रष्टाचार फैला हुआ है। सोने की चिड़िया के पंख बेरहमी से नोचे जा रहे हैं। आज के समय में नेकी की ताकतें बदी की ताकतों के सामने डगमगा रही हैं। अराजकता और अन्याय का माहौल है। अब तो आत्म-परस्ती, परिवार-परस्ती, नशेड़ीपन, चारित्रिक गिरावट की पराकाष्ठा वाला सभ्याचार ही प्रधान है। आज ज़रूरत है नेकी की शक्तियों को एकजुट, एकमत व सुदृढ़ कर बदी की शक्तियों को पराजय दी जाये और कुर्बानी, त्याग, सर्वधर्म समभाव, सहनशीलता, नेकी, ईमानदारी, नैतिकता, देश-भक्ति, चढ़दी कला एवं सरबत्त के भले की भावना पैदा की जा सके; मानवता को सुखी किया जा सके। दशमेश जी के जीवन से यही शिक्षा मिलती है। आओ! प्रयास करें और गुरु साहिबान व खालसा पंथ द्वारा अनगिनत संघर्षों व शहादतों द्वारा सृजित किये मुकम्मल इंकलाब को पुनर्जीवत करें, जहां *''सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ॥''* तथा *''बेगम पुरा सहर को नाउ॥''* का बोलबाला हो सके और हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा ख़ालसे की माता, माता साहिब कौर जी के नादी पुत्र होने का सम्मान प्राप्त कर सकें एवं खालसा पंथ के असल वारिस बन सकें।

तूं बराइ वसल करदन आमदी।
न बराइ फ़सल करदन आमदी।

प्रीति पैग़ंबर गुरू

-प्रो. पिआरा सिंघ पदम (दिवंगत)

हर समय, हर देश में धर्म, कला और दर्शन का एक ही पावन उद्देश्य रहा है कि मानव को ज़िंदगी की एकता का सबक दृढ़ करवाया जाये और इसी के सहारे ही मानवीय समाज में एकात्मकता पैदा कर शान्ति-अमन में रहते हुए संस्कृति की ऊंचाइयों को छुआ जाये और आने वाली पीढ़ी के लिए उच्च, शुद्ध और सार्थक उद्देश्य पेश किया जाये। सिक्ख धर्म का आदर्श भी यही था कि चढ़दी कला के साथ-साथ 'सरबत के भले' को अग्रणी स्थान दिया जाये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत आध्यात्मिक गुरु, वीर सेनापति और विद्वान बाणीकार का संगम थी। दूसरे शब्दों में गुरुता, वीरता और काव्यता उनके मुख्य गुण थे, परन्तु प्रधानता गुरुता को ही प्राप्त थी।

गुरुता का बड़ा लक्षण यह बताया गया है कि गुरु जहां खुद उस परम ज्योति के साथ एकसुर होता है, वहीं बाकी सबको भी उसके साथ मिलाता है। उसका कर्त्तव्य भी ज़िंदगी का संयोग बनाना है, जैसे कि मौलाना रूमी ने लिखा है कि भाई ! तू दुनिया में आया ही इसलिए है कि सबको मिलाए, न कि अलग-अलग करे। उसका वादा है :

तूं बराइ वसल करदन आमदी।
न बराइ फ़सल करदन आमदी।

गुरबाणी में गुरु का लक्षण भी इसी प्रकार दिया गया है कि वह मानवीय आत्मा को मालिक परमात्मा के साथ मिलाये और मानव को मानव के गले लगाये :

नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ
जो सभसै लए मिलाइ जीउ॥ (पन्ना ७२)

श्री गुरु अरजन साहिब का फ़रमान भी इसी भाव का है :

जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु॥
विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु॥
(पन्ना ९५७)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस गुरुआई माला के अंतिम मोती थे।

उन्होंने मानव को ईश्वर के साथ मिलाने और मनुष्यों को परस्पर मिलाने के बड़े सार्थक यत्न किये। यह ठीक है कि वे खड्‌गधारी योद्धा थे। उन्होंने सिक्खों को खड्ग का योग्य प्रयोग भी बताया, परन्तु साथ ही उन्होंने इसे आखिरी हथियार ही कहा। स्पष्ट ताकीद की कि जब कोई साधन बाकी न रहे तो ही खड्‌ग की मुट्ठी पर हाथ रखना जायज है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत॥
हलाल स्सतु बुरदन ब शमशीर दसत॥२२॥
(*ज़फ़रनामा*)

जहां तक जीवन-जाच का सम्बंध है, सतिगुरु ने यह विशेष बात कही कि परमेश्वर प्रेम-स्वरूप है और वह अनुराग या मोहब्बत बन कर ही जगत के बाग़ में चहल-पहल पैदा कर रहा है। फिर उसे पाने की विधि भी प्रेम ही है, बाकी साधन तो यूं ही दिखावा-मात्र हैं। गुरु साहिब फ़रमान करते हैं :

देस और न भेस जाकर रूप रेख न राग॥
जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग॥८०॥
(*जापु*)

और :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥ ९ ॥२९ ॥ (अकाल उसतत)

गुरु दशमेश खड्गधारी योद्धा थे। इससे भी अधिक विशेषता वाली बात यह कि वे प्रीति-पैग़म्बर थे, जिन्होंने मानवता को एकता और प्रेम-प्यार का पैग़ाम दिया। ख़ालसे को यह बात दृढ़ कराई कि ''पूरन प्रेम प्रतीति सजै ब्रत'' अर्थात् पूरे प्रेम-भाव के साथ प्रभु के भरोसे का प्रण निभाना प्राथमिक कार है।

धार्मिक महापुरुषों की दृष्टि यूनिवर्सल अथवा विश्वव्यापक होती है और आम तौर पर संसारी आदमी की दृष्टि स्वार्थी होती है। गुरु साहिब परोपकारी थे और समूचे संसार के कल्याण की सोच रखते थे।

अनेक तरह की विरोधताओं, कठिनाइयों के बावजूद गुरु कलगीधर पातशाह यह समझते और अनुभव करते थे कि सबका इष्ट परमेश्वर एक है। रास्ता दिखाने वाला गुरु भी एक है। उसकी कायनात एक है, सारी मानवता एक है और उसका धर्म एवं शिष्टाचार भी एक है। इस एकता की पहचान करना ही जीवन का भेद है। अगर मानवीय आत्मा ने परमात्मा को पाना है और उसकी सृष्टि को प्रसन्न करना है तो इसकी एकमात्र विधि सबके साथ प्रेम-प्यार का व्यवहार करना है। पूर्ण खालसा भी वही हो सकता है जो प्रेम-मोहब्बत का व्रत धारण करता है और कण-कण में जाग़त ज्योति के दर्शन करता है :

जाग़त ज़ोत जपै निसबासुर,
एक बिना मन नैक न आनै ॥
पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत,
गोर मड़ी मट भूल न मानै ॥ (दसम ग्रंथ, पन्ना ७१२)

आपने इंसानी एकता पर बहुत ज़ोर दिया और धर्म-कर्म की एकता को भी पहचानने की ताकीद की। यही एक सार्थक विधि है जिससे सरबत्त के भले का मिशन पूरा हो सकता है। ईसाई चिंतन में 'प्रेम ही ईश्वर' का ख़्याल दिया गया है और बहुत-से लोग ऐसा समझते हैं कि एक यह विचार पश्चिम की तरफ से इधर आया है, जबकि गुरु दशमेश की बाणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि उन्होंने परमेश्वर को प्रेम-रूप होकर सब जगह विचरण करता हुआ बताया और प्रेम द्वारा ही उसे पाने का मार्ग दिखाया है। इस ख़ातिर एकतावादी होना प्राकृतिक और बहुत ज़रूरी था। 'अकाल उसतत' में जहां ईश्वरीय महिमा का गान है, वहीं कर्मकांडी धर्मों की छानबीन भी बहुत निडरता एवं निपुणता के साथ करने के उपरांत चार कबित्तों में ज़िंदगी और धर्मों की एकता बड़े प्रभावशाली ढंग से दृढ़ कराई गई है।

पहले कबित्त में मानवीय-एकता का पाठ पढ़ाते हुए इस तरह समझाया है कि सन्यासी, योगी, यति, हिंदू, तुर्क या शिया-सुन्नी में कोई भिन्न-भेद नहीं, सभी पांच तत्व के पुतले और पांच ज्ञान-इंद्रियों के मालिक हैं। यह मानस की जाति एक है। सबका मालिक-सृजनहार भी एक ही है और ज्ञान-दाता गुरुदेव भी ज्योति स्वरूप एक है :

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफ़ी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
करता करीम सोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो ॥ १५ ॥८५ ॥

(अकाल उसतत)

आदि अंति एकै अवतारा ॥
सोई गुरू समझियहु हमारा ॥ ९ ॥

(चौपई पात. १०)

दूसरे कबित्त में सतिगुरु ने यह समझाया है कि देहुरा-मस्जिद या पूजा-नमाज़ में कोई भिन्न-भेद नहीं। लोगों ने अपनी-अपनी आस्था और श्रद्धा के अनुसार उसके धर्म-स्थान सृजित किए और अपनी-अपनी भावना के मुताबिक उसकी भक्ति या बंदगी करने की विधि अपनाई है। भीतरी भावना सबकी एक जैसी है। उसमें जरा भी फर्क नहीं। बाहरी सूरत को सम्मुख रख कर इंसानों में भिन्न-भेद करना या कोई फ़र्क मानना ठीक नहीं। आप फरमान करते हैं :

देहरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ॥
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ॥
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥ १६ ॥ ८६ ॥

(अकाल उसतत)

जैसे आग की ज्वाला में से करोड़ों चिंगारियां उड़ती हैं और आसमान में अपनी चमक-दमक दिखाती हैं, परन्तु होती सब आग का रूप ही हैं; जैसे सागर में अनेक तरंगें, लहरें हैं, परन्तु होती सब पानी ही हैं; जैसे धरती से उड़ने वाले मिट्टी के जर्रे पवन के साथ खेलते-खेलते ऊंचे गगन को भी जा छूते हैं, परन्तु अंततः सब धरती माता की गोद में आ समाते हैं, इसी तरह सारी कायनात, सारा प्रसार उस परम-ज्योति की चमक है और अंत में इसने उसी में अभेद हो जाना है। जिसने यह रहस्य समझ लिया है वह कोई भ्रम-भेद नहीं करता, बल्कि सबके साथ प्यार करता है :

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है
धूर के कनूका फेर धूर ही समाहिंगे ॥
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत हैं
पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे ॥
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ
ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१७॥८७॥

(अकाल उसतत)

ऐसी दृष्टि वाले भाई घन्हईआ जी की तरह अपने प्रभु को मनुष्य-मात्र में देख कर प्रेम-प्यार का व्यवहार करते और अपने आप तथा अपने आस-पास प्राणी-मात्र में सदा खुशियां बांटते हैं। उनके लिए कोई भी बेगाना नहीं। हिंदू, तुर्क तो क्या, तमाम जीव-जंतु भी उनको परम ज्योति के करिश्मे दिखाई देते हैं :

बिसरि गई सभ ताति पराई ॥. . .
ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

भाई नंद लाल जी ने कहा है कि ब्राह्मण बुतों का इच्छुक है और मोमिन कहलाता है, परन्तु हमें तो हर तरफ़ मोहब्बत का प्याला ही छलकता दिखाई देता है :

ब्रहमन मुशताकि बुत्त,
ज़ाहिद फ़िदाइ खानकाह।
हर कुजा, जामि मुहब्बत,
दीदाअम सरशार हस्त ॥ ६ ॥ (ग़ज़ल)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का फ़रमान भी इसी अभेदता और समता का वर्णन करता है :

जा ते छूटि गयो भ्रम उर का ॥
तिह आगै हिंदू किआ तुरका ॥१९ ॥

(चौबीस अउतार, पन्ना १५७)

गुरु साहिब ज़िंदगी के सर्वपक्षीय विकास के लिए वचनबद्ध थे। उन्होंने ख़ुद यह बात भी दोहराई है कि जब कोई काम सभी प्रयासों से हल न हो तो ही कृपाण के मुट्ठे पर हाथ रखना जायज है। इसका साफ़

और स्पष्ट तात्पर्य यह है कि पहले सभी शांतमयी साधन प्रयोग में लाए जाएं। यदि इनसे बात न बने तो ही तेग़ उठानी चाहिए। इतिहास से प्रकट है कि उन्होंने खुद हमलावर होकर लड़ाई नहीं लड़ी, बल्कि केवल सुरक्षा की ख़ातिर ही हथियार उठाए। जंग-युद्ध उनका मनोकांक्षित कार्यक्रम नहीं था, केवल समय की ज़रूरत थी।

कहीं-कहीं यह ख़्याल भी प्रचारित किया गया है कि वे मुसलमानों के शत्रु थे। यह बात भी बेबुनियाद है। उनका किसी के साथ व्यक्तिगत वैर नहीं था। सतिगुरु-चरित्र का यह विशेष गुण है कि वे निरभउ-निरवैर हैं :

सतिगुर पुरखु अगंमु है निरवैरु निराला।
जाणहु धरती धरम की सची धरमसाला।

(वार ३४: १)

इसका ऐतिहासिक प्रमाण भी हमारे सामने है कि उन्होंने भाई घन्हईआ जी को हर ज़ख़्मी को पानी पिलाने के लिए शाबाश देते हुए साथ में मरहम की डिबिया भी दी कि बिना किसी भेदभाव के हर ज़ख़्मी के ज़ख्मों पर मरहम भी लगाई जाये।

इसके अलावा अनेक मुसलमान आपके मित्र और अनन्य श्रद्धालु भी थे, जिनमें पीर भीखण शाह, काज़ी सलारुद्दीन, निहंग खान, आलम खान, नबी खान, गनी खान, सैद बेग, इब्राहिम खान, हाजी चिराग़ शाह अजनेरिया, काज़ी पीर मुहम्मद सलोह वाला, इनायत अली नूरपुरिया, सुबेग शाह हलवारिया, हसन अली मोनूमाजरिया आदि प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने सतिगुरु को दिल से प्यार किया और मुश्किल के समय भी आपका साथ दिया।

मानस की जाति एक मानने वाला किसी के साथ द्वैत या वैर-विरोध कर ही नहीं सकता। वह सबको आलिंगन में लेकर प्रसन्न होता है। भाई नंद लाल जी ने लिखा है :

ख़ालिसो बे-कीना गुर गोबिंद सिंघ
हक्क हक्क आईना गुर गोबिंद सिंघ ॥१२४॥...
कादिरि हर कार गुर गोबिंद सिंघ
बेकसां-रा यार गुर गोबिंद सिंघ ॥१३६॥

(गंजनामा)

आज इस समदृष्टि और सर्वधर्म समभाव की भावना की पहले से ज्यादा ज़रूरत है, क्योंकि राजनीतिक खिलाड़ियों ने लोकतंत्र, समाजवाद जैसे उच्च आदर्शों को अपने छल-फ़रेब एवं कुटिल नीतियों से इतना धुंधला और मलिन कर दिया है कि किसी शुद्ध संस्कृति का स्थान ही नहीं रहा। मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि वह हर क्षेत्र में ख़ुदगर्ज़ी का शिकार है। वोट लेने की ख़ातिर जात-पांत का भेदभाव और छोटे-बड़े का टकराव वर्तमान कूटनीति का ज़रूरी भाग है। वादप्रस्ती या देश-भक्ति भी उसे संकीर्ण बनाती गई है। किसी को मानवीय कल्चर का कोई एहसास नहीं रहा। शायर सच कहता है :

न मुहब्बत न मुहव्वत न खलूस,
शर्मिंदा हूं इस दौर का इंसां होकर।

''जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ'' का संदेश देने वाले गुरु का एक ही उद्देश्य था कि तमाम मानवता प्रीति-धागे में पिरोई जाये और प्रेम-प्यार ही सबका मज़हब व सबकी राजनीति हो तो ही आज का मानव स्व-सृजित संकट में से बाहर निकल सकता है। ज़रूरत है, उस प्रीति पैग़म्बर के पैग़ाम को पहचानने की!

सद्भावना के सूर्य : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा**

एक व्यक्ति की किसी अन्य व्यक्ति के प्रति प्रेम, हित और शुभ की भावना, सद्भावना है। सद्भावना ही मानवता का मूल-मंत्र है। आम व्यक्ति की तुलना में संत की सद्भावना का क्षेत्र अधिक विस्तृत और व्यापक होता है, क्योंकि उसका संबंध किसी व्यक्ति, पंथ, जाति या धर्म विशेष से नहीं होता, अपितु सम्पूर्ण मानव वर्ग से होता है। इस दृष्टि से संत सद्भावना का सूर्य होते हैं। जैसे सूर्य अपना प्रकाश बिना किसी भेदभाव के सभी प्राणियों को वितरित करता है, वैसे ही संत अपनी कृपा और आशीर्वाद से सभी का मार्गदर्शन कर उन्हें धन्य करता है।

जन्म के बाद जब करनाल से पटना साहिब आकर पीर भीखण शाह ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सामने दूध एवं पानी के दो कटोरे रखे थे तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सहजता से दोनों कटोरों पर हाथ रख दिया था। तब पीर जी ने भविष्यवाणी की थी कि यह दिव्य बालक बड़ा होकर साझा पीर बनेगा और दोनों धर्मों का सम्मान करेगा। भविष्यवाणी सच साबित हुई और गुरुदेव महान संत के रूप में सद्भावना के सूर्य बन गए। वे गुरबाणी के उपासक थे, जो कहती है— *''एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥''*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अनुसार जब समूची सृष्टि का रचियता एक है, तो उसकी संतान में भेदभाव नहीं हो सकता। रूप, रंग, वेश-भूषा, भाषा व उपासना-पद्धतियां चाहे अलग-अलग हों, पर सभी मनुष्य एक अकाल पुरख की ही संतान हैं:

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है
धूर के कनूका फेर धूर ही समाहिंगे ॥. . . १७ ॥८७ ॥

(अकाल उसतत)

चिंगारियां आग से उत्पन्न होती हैं और आग में ही समा जाती हैं। धूल-कण धूल से उत्पन्न होकर धूल में ही समा जाते हैं। जैसे चिंगारियों और धूल-कणों में भेद करना संभव नहीं, वैसे ही प्राणी-मात्र प्रभु की उत्पत्ति है, अत: वर्ण, वर्ग, जाति और धर्म के आधार पर विभाजन नहीं होना चाहिए; उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग की उपेक्षा और शोषण नहीं होना चाहिए। यह अन्याय और अधर्म है। इसी अधर्म के विरुद्ध व्यापक जनचेतना जागृत करने के लिये गुरुदेव ने खालसा पंथ की स्थापना की, एक जातिविहीन पंथ, सद्भावना का पंथ। प्रारंभ में बने पांच प्यारों में एक क्षत्रिय थे और शेष चार तथाकथित निम्न जाति के थे। भिन्न-भिन्न जातियों के लोग पंथ में शामिल हुए। उनकी पुरानी जातियां समाप्त हुईं और एक नई जाति अस्तित्व में आई,

**६१/१५, आभार, आजाद नगर, उज्जैन (म. प्र.)—४५६०१०, फोन : ९८९३४-४१७६०*

सद्‌भाव और समभाव की जाति— खालसा अर्थात् खालिस, शुद्ध और पवित्र।

भाई नंद लाल जी ने अपनी रचना 'गंजनामा' में इसी सद्‌भावना के आधार पर गुरुदेव को 'नासिरो मनसूर', 'बेकसां रा यार' अर्थात् बेसहारों का सहारा और 'बरहमि हर रंज' अर्थात् दुखहंता कहा।

सामाजिक सद्‌भावना के प्रसार हेतु गुरुदेव ने लंगर की परंपरा का अधिक से अधिक विस्तार किया। विभिन्न जातियों और वर्गों के लोगों के एक साथ एक पंगत में बैठकर भोजन करने एवं परोसने से परस्पर प्रेम, स्नेह तथा सद्‌भावना का आत्मीय वातावरण विकसित होता है। लंगर का यही केंद्रीय भाव है। इस संबंध में प्रसिद्ध इतिहासकार कनिंघम ने लिखा है कि ''तथाकथित नीच से नीच जाति के लोग भी तथाकथित ऊंची जाति के लोगों के बराबर हो गए। चारों वर्ण एक स्थान पर बैठ कर, एकरूप होकर, एक जैसे ही पात्र में खाने लगे।''

गुरुदेव जी सभी धर्मों में सद्‌भावना और समरसता के पक्षधर थे। उन्होंने दोनों धर्मों के अनुयायियों को सद्‌भावना का संदेश देते हुए फरमान किया :

एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतश औ आब को रलाउ है ॥
अलहि अभेखु सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है ॥

(चरित्रोपाख्यान)

सभी के शरीर में एक ही परमात्मा की ज्योति है, तो फिर भेदभाव किस बात का और क्यों? जो जीवात्मा की मूल एकता के इस सत्य को जानता है उसी को सिद्धि प्राप्त होती है :

भिंन भिंन सभहूं कर जाना ॥
एक रूप किनहूं पहिचाना ॥
जिन जाना तिन ही सिध पाई ॥
बन समझे सिध हाथि न आई ॥१० ॥५ ॥

(बचित्र नाटक)

चाहे भिन्न-भिन्न जातियां हैं, उपजातियां हैं, धर्म हैं, पंथ हैं, मगर मानव की मूल जाति एक ही है और वो है उसका मानव होना :

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
करता करीम सोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो ॥१५ ॥८५ ॥

(अकाल उसतत)

गुरुदेव के अनुसार मंदिर-मस्जिद, हिंदू-मुस्लिम, राम-रहीम, कुरान-पुरान और वेद-कतेब में कोई अंतर नहीं है। आंतरिक रूप से सभी एक हैं। सभी में अकाल पुरख प्रभु का प्रकाश है। गुरुदेव ने सद्‌भावना के मार्ग में बाधक अहं और स्वार्थ की संकीर्ण भावना को त्याग कर उदारता व विनम्रता का जीवन जीने का संदेश दिया। वस्तुतः सरलता, सहजता, विनम्रता जैसे गुणों से ही मनुष्य का आत्मिक विकास होता है। जातियों व धर्मों में समरसता बढ़ती है। गुरुदेव मानवता के हमदर्द थे। वे समूची मानवता से प्रेम रखते थे। उनके जीवन और उनके साहित्य का मूल संदेश ही प्रेम है।

मनुष्य के परस्पर प्रेम का महत्व बताते हुए गुरु

जी ने फरमान किया कि प्रभु की प्राप्ति तभी संभव है जब सभी के प्रति हृदय में प्रेम हो। सभी के शरीर में परमात्मा का अंश आत्मा के रूप में विद्यमान है और परमात्मा का दर्शन प्रेम से ही संभव है :

साचु कहूं सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥

(त्व प्रसादि सवैये)

खालसा पंथ की स्थापना के अवसर पर भिन्न-भिन्न जाति-वर्ग से संबंध रखने वाले पांच प्यारों को एक ही पात्र से अमृत-पान कराया। बाद में गुरु जी ने स्वयं पांच प्यारों के हाथों विनीत भाव से अमृत-पान किया। भारत ही नहीं विश्व के इतिहास में भी यह घटना 'न भूतो न भविष्यति' है। गुरु जी की अपने शिष्यों के प्रति श्रद्धा और सम्मान की भावना, सद्भावना की अनूठी मिसाल है। खालसा का सम्पूर्ण जीवन-दर्शन सद्भावना पर आधारित है। गुरुद्वारे में शबद-कीर्तन, सतसंग, सेवा, कार सेवा, सिमरन, अरदास और लंगर आदि सभी सामूहिक आधार पर आयोजित होते हैं, जो सामाजिक एकात्मकता को जन्म देते हैं। सामाजिक एकात्मकता से जो प्रेम उत्पन्न होता है वही ईश्वर-प्राप्ति में सहायक है।

गुरुदेव के अनुसार पंथ में सब एक समान हैं। सबके अधिकार समान हैं। गुरुदेव भी अमृत-पान कर खालसा बन गए। यह भी इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना है कि किसी पंथ के संस्थापक का अपनी संस्थापना के प्रति कोई विशेष अधिकार या पद नहीं था। विशुद्ध जनतांत्रिक व्यवस्था का आदर्श उदाहरण बन गया— खालसा। समतावादी विचार को आत्मसात करे वह खालसा है। खालसा ही गुरु है और गुरु ही खालसा है। पांच प्यारे खालसा के प्रतीक थे और खालसा गुरु का। सिक्ख पंथ के प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी ने भी जब अपने आदर्श सिक्ख भाई लहिणा जी को गुरु-पद पर आसीन किया तो 'अंगद' नाम देकर उन्हें नमन किया था। सद्भावना की इस विरासत का श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सम्मान किया। गुरुदेव की इस सद्भावना के बारे में भाई गुरदास सिंघ जी ने लिखा है:

वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१ ॥४१ ।

गुरु जी का विरोध जालिम औरंगजेब और उसके सूबेदारों से था। व्यक्तिगत रूप से मुसलिमों के प्रति उनमें द्वेष या घृणा की भावना नहीं थी। उनकी सेना में कई मुसलमान सैनिक शामिल थे। उनका विरोध उस धर्मांधता से था जो अन्याय, अनीति और अधर्म को जन्म देती है। सद्भाव संबंधों के कारण ही औरंगजेब और उसके सूबेदारों की चिंता किए बिना पीर बुद्धू शाह जैसे कई मुसलिमों ने युद्धों में गुरुदेव का साथ दिया। संकट के समय अपने प्राण जोखिम में डाल भाई नबी खान, भाई गनी खान, पीर मोहम्मद आदि ने गुरुदेव का सहयोग किया। भाई नबी खां और भाई गनी खां ने मुगल सेना से गुरुदेव की रक्षा करने के लिये उन्हें 'उच्च का पीर' का रूप प्रदान कर माछीवाड़े के बीहड़ से सुरक्षित बाहर निकाला। मुगल सेनापति सैयद बेग गुरुदेव से इतना प्रभावित था कि वह अपने सैनिकों सहित गुरु जी की सेना में शामिल हो गया।

गुरुदेव जी के धर्म-युद्धों का मूल आधार सद्भावना था। उन्होंने कभी किसी राज्य पर

आक्रमण नहीं किया, सदैव आक्रमण का जवाब ही दिया। पहाड़ी राजाओं की बार-बार की धृष्टताओं को क्षमा किया। युद्ध में पराजित होकर पलायन करने वाली शत्रु सेनाओं का कभी पीछा नहीं किया। यह उनकी सद्भावना का ही परिचायक है। चमकौर के युद्ध में वीरगति को प्राप्त साहिबजादे बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी के युद्ध-भूमि में पार्थिव शरीरों को जब भाई दया सिंघ जी ने उन्हें वस्त्र से ढकने की बात की तो गुरुदेव ने जवाब दिया— ''किस-किस शरीर को ढकोगे भाई दया सिंघ जी, सभी शहीद मेरे पुत्र हैं!'' गुरुदेव की सद्भावना का एक उदाहरण है उनके दमदमा साहिब निवास का भी, जहां माता सुंदरी जी द्वारा साहिबजादों के बारे में पूछने पर गुरुदेव ने संगत की ओर संकेत करते हुए फख्र से कहा :

इन पुत्रन के सीस पर वार दिये सुत चार।
चार मुए तो किया हूआ जीवत कई हजार।

युद्धों में विजय का श्रेय कभी गुरुदेव ने स्वयं न लेकर ईश्वर की कृपा और आशीर्वाद के साथ अपने सैनिकों की वीरता को दिया। वीर सिक्ख सैनिकों के प्रति अपनी सद्भावना का परिचय उन्होंने इस प्रकार दिया :

जुद्ध जिते इनही के प्रसादि
इनही के प्रसादि सु दान करे॥
अघ अउध टरै इनही के प्रसादि
इनही की क्रिपा पुन धाम भरे॥
इनही के प्रसादि सु बिदिआ लई
इनही की क्रिपा सभ सत्रु मरे॥
इनही की क्रिपा ते सजे हम हैं
नहीं मो सो गरीब करोर परे॥ *(श्री दसम ग्रंथ)*

गुरु साहिब की सद्भावना-नीति की पराकाष्ठा हैं— भाई घन्हईआ जी। भाई घन्हईआ जी घायलों को पानी पिलाया करते थे। गुरु जी के कहने पर भाई घन्हईआ जी घायल सैनिकों की मरहम पट्टी भी करने लगे। गुरुदेव अपने तीरों में सोना जड़वाते थे, ताकि उनके तीरों से घायल शत्रु सैनिक अपना उपचार करा सकें और मृतक सैनिकों के परिवारों को राहत मिल सके। भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व के इतिहास में सद्भावना का यह अनूठा उदाहरण है।

इतना ही नहीं, गुरुदेव ने गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले पहाड़ी राजाओं को भी संकट के समय सैन्य सहयोग दिया। अपने शत्रुओं को क्षमा कर वे अपनी वीरता का ही परिचय देते थे। उनकी सद्भावना 'सरबत का भला' भी सिक्ख अवधारणा पर आधारित है। गुरु जी के पवित्र उद्देश्य ''धरम चलावन संत उबारन'' के लिये यह आवश्यक भी था।

गुरु जी के विद्या दरबार के ५२ कवियों में भिन्न-भिन्न धर्मों, जातियों एवं वर्गों के लोग थे। गुरुदेव के दरबार में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। कवियों की नियुक्ति उनकी काव्य-प्रतिभा और विद्वता के आधार पर की गई थी। अपने बाल्य-काल के संस्कृत-गुरु श्री किरपा राम, जो बाद में अमृत-पान कर भाई किरपा सिंघ बन गए थे, को भी गुरुदेव ने अपने दरबार में सम्मानजनक स्थान दिया था। सद्भावना ही मानवता का सच्चा धर्म है। गुरुदेव सद्भावना का जीवंत प्रतीक थे।

पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

जगत्-गुरु, खालसा पंथ के सृजक, सरबंसदानी, संत-सिपाही, महान् जरनैल, युगपुरुष, निर्भय क्रांतिकारी, उच्च कोटि के विद्वान, चिंतक, दार्शनिक, दीन-दुखियों के रक्षक, निराश्रितों, नि:सहायों को गले लगाने वाले, खंडे-बाटे का अमृत छकाकर ऊंच-नीच का भेदभाव खत्म करने वाले, महान् पैगंबर, महान् रहबर, साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का संपूर्ण जीवन संघर्ष, अदम्य साहस, सहिष्णुता, आदर्श की पराकाष्ठा कहा व माना जाना चाहिए। वे अपने बचपन में अपने बाल-सखाओं से बिलकुल अलग स्वभाव के थे। विलक्षण प्रतिभा की गाथा बयान करता है उनका बचपन।

उनकी अद्वितीय, शिरोमणि एवं महान् शख्सियत के भिन्न-भिन्न पक्षों के वर्णन के यत्न विश्व के भिन्न-भिन्न विद्वानों, इतिहासकारों एवं लेखकों द्वारा होते रहे हैं, हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी विराट व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे महान सम्राट थे। ऐसे महान् सम्राट जिन्होंने जनसाधारण के सम्मान, स्वतंत्रता, शासन, न्याय के लिए युद्ध लड़े।

एक कथा बहुत प्रसिद्ध है कि जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश हुआ, तब पीर भीखण शाह अपने साथियों सहित पटना साहिब में उनके दर्शन-दीदार हेतु गये। उन्होंने परीक्षा लेने हेतु दो कुल्हड़ लिए। एक में दूध तथा दूसरे में पानी भर कर (दूध का अर्थ हिंदू व पानी का अर्थ मुसलमान) उनके आगे रखे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने दोनों हाथ दोनों कुल्हड़ों पर एक साथ रखे। यह देखकर पीर भीखण शाह अति प्रसन्न व अभिभूत हो उठें। उनकी आत्मा संतुष्ट व तृप्त हो उठी। वे समझ गये कि गुरु जी दोनों धर्मों को एक समान प्यार करेंगे। गुरु जी यह दर्शाने व बताने इस धरा पर आए हैं कि सच्चे धर्म की स्थापना की जरूरत है और धर्म को बंदिशों में से निकालने पर ही मानवता का कल्याण हो सकता है। सभी एक समान हैं।

पुरातन ग्रंथों में पटना साहिब के कई नामों का वर्णन मिलता है, जैसे पाटलिपुत्र, पाटलि बोथा, पुष्पपुर, कुसुमपुर, कुसमावती, मौर्यनगर, पटला, गाज़ियाबाद और फिर पटना आदि। कहा जाता है कि कभी बाढ़ से तो कभी भयंकर आग से पटना नगर कई बार

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०

बर्बाद हुआ।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब आसाम से लौटकर पटना साहिब में कुछेक दिन रहकर वापिस पंजाब आ गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पटना साहिब में माता गुजरी जी के पास ही रहे। उन्होंने अपना बालपन पटना साहिब शहर में ही व्यतीत किया। उस समय पटना साहिब भी मुगल शासकों का एक केंद्र था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बचपन में भी अद्‌भुत प्रतिभा व दूरदृष्टि के मालिक थे। उन्होंने पटना साहिब में रहते हुए भावी योजनाओं की तैयारी शुरू कर दी थी। वे छोटे-छोटे बच्चों को खुले मैदान में ले जाकर खेल खेलते। अपने साथियों की दो टोलियां बनाकर उनमें नकली युद्ध करवाते। जीतने वाली टोली को पुरस्कार देते। कई बार माता गुजरी जी के हाथों भी पुरस्कार दिलवाते।

गुलेल चलाने को तीरंदाजी का प्राथमिक अभ्यास कहा जा सकता है और गुलेल चलाने में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इतने कुशल हो चुके थे, कि पनिहारनें जब गंगा नदी से अपने घड़ों में पानी भरकर घरों को लौट रही होतीं, तब कभी-कभी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपनी गुलेल चलाकर उनके घड़े फोड़ देते। पनिहारनें उलाहना देने को माता गुजरी जी के पास पहुंच जाती। माता गुजरी जी मीठे वचन बोलकर उन्हें शांत करती और अपने पास से उन्हें नए घड़े दे देती। साथ में कुछ पैसे भी।

एक दिन गंगा नदी के तट पर खेल-खेल में गुरु जी का एक कंगन गंगा नदी के पानी में गिर गया। जब घर पर लौटे, तब उनका एक हाथ खाली देख माता गुजरी जी ने प्यार से पूछा, ''अरे, भाग जी! आपका एक कंगन कहां गया?''

गंगा नदी के तट पर पहुंच कर उन्होंने अपने दूसरे हाथ से कंगन निकाला और पहले गिरे कंगन वाली जगह पर अपना दूसरा कंगन पानी में फेंकते हुए फरमाया, ''माता जी! मेरा कंगन वहां गिरा था।''

माता गुजरी जी उनके इस भोलेपन पर मुस्करा उठीं और उन्हें अपने गले से लगा लिया। वे समझ गईं कि यह बालक बड़ा होकर कभी भी धन-दौलत, मोह-माया के प्रति आसक्त नहीं होगा और लोगों को भी माया-जाल से बाहर निकालने का काम करेगा।

व्याप्त एवं प्रचलित भ्रमों के विरुद्ध भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बोलते थे, अनावश्यक रस्मों का मज़ाक उड़ाते थे। गुरु जी गंगा में नहा रहे पंडितों के जल से भरे कमंडलों को उलटा कर जल बहा देते। पंडित चीखते-चिल्लाते, रोष प्रकट करते, परंतु गुरु जी किलकारियां मारते हुए दूर जा खड़े होते। सारांश यह है कि ये सभी कर्म आने वाले समय की तैयारी थी। ये छोटे कदम बाद में बड़े तूफान बने।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने सन् १६७२ ई. में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एवं माता गुजरी

जी को श्री अनंदपुर साहिब अपने पास बुलवा लिया। वे पटना साहिब से दानापुर, बकसर, छोटा मिर्ज़ापुर होते हुए बनारस पहुंचे। जौनपुर पहुंचने पर भाई गुरबखश जी संगत सहित उनके दर्शन हेतु आए। फिर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इलाहाबाद, लखनऊ पहुंचे। लखनऊ में लगभग दो माह रुके रहे। तदुपरांत कानपुर, बिठूर, आगरा, मथुरा, बरेली, नानकमता, हरिद्वार, सहारनपुर होते हुए सन् १६७२ ई. के अंत में लखनौर पहुंचे। वहां से घुड़ाम में पीर भीखण शाह से भेंट कर मनीमाजरा, रोपड़ होते हुए श्री कीरतपुर साहिब पहुंचे। श्री कीरतपुर साहिब श्री अनंदपुर साहिब के पास स्थित है।

गुरु जी को भांति-भांति की विद्या सिखाने का प्रबंध किया गया। फारसी, बृज भाषा, संस्कृत तथा अन्य भाषाओं का ज्ञान दिया गया। 'बंसावलीनामा' का लेखक लिखता है कि भाई हरजस राय ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को शाब्दिक व अन्य विद्याएं प्रदान की :

हरि जसराय सिख इक ब्रहमन।
गुरमुखी, फारसी शास्त्री पढ़िया जैमन।
उस पासों साहिब गुरमुखी अखर सिखे।
सो प्रीत नाल दसे सिखणे दे लिखे।

शस्त्र-विद्या में गुरु जी ने निपुणता हासिल की। यह विद्या शाहदरा वाले भाई बजर सिंघ ने सिखाई थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आयु उस समय केवल नौ वर्ष की थी, जब पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद किया गया। श्री गुरु तेग बहादर जी को ११ मार्गशीर्ष, संवत् १७३२ को दिल्ली के चांदनी चौक में शहीद कर दिया गया और गुरुआई की जिम्मेदारी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को सौंपी गई।

शोक संवेदना

हम अपने पाठकों को बड़े दुख के साथ बता रहे हैं कि डॉ. जगजीत कौर जी सहारनपुर वालों का पिछले दिनों निधन हो गया है। हमें उनके द्वारा लिखित रचनाएं पढ़ने व प्रकाशित करने का लंबे समय तक सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। हमें हमारे लेखकों की माला का एक मोती गिर जाने का बेहद शोक है। वाहिगुरु के चरणों में अरदास है कि वे डॉ. जगजीत कौर जी की आत्मा को अपने चरणों में निवास प्रदान करें।

—संपादक।

महान बलिदानी, योद्धा और विद्वान : बाबा दीप सिंघ जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

जब भी श्री हरिमंदर साहिब की चर्चा चलती है तब हमेशा महान् बलिदानी बाबा दीप सिंघ जी की अद्वितीय शहीदी की याद अनायास आ जाती है। बाबा जी ने श्री हरिमंदर साहिब की पवित्रता की रक्षा के लिए बलिदान दिया। आध्यात्मिक शक्ति के पुंज बाबा दीप सिंघ जी शीश कट जाने के बाद भी शीश हथेली पर रख कर लड़े और श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में पहुंच कर अपना वचन पूरा किया।

जन्म एवं शिक्षा-दीक्षा : बाबा दीप सिंघ जी का जन्म श्री अमृतसर के पहुविंड नामक गाँव में पिता भगता जी और माता जीऊणी जी के घर सन् १६८२ ई. में हुआ था। बाबा जी बचपन में ही दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में श्री अनंदपुर साहिब आ गये थे। बाबा जी ने दशमेश पिता के हाथों से अमृत-पान किया और उन्हीं से शस्त्र-संचालन एवं गुरबाणी-अध्ययन की शिक्षा प्राप्त की। बाबा जी की रुचियां आध्यात्मिक थीं और आप सदैव नाम-सिमरन तथा गुरबाणी-पठन में रत् रहते।

दूसरी ओर आप अत्यंत सुडौल एवं दृढ़ शरीर वाले योद्धा भी थे। आपने दशमेश पिता द्वारा लड़े गये सारे युद्धों में भाग लिया और खूब पराक्रम दिखाया।

बाबा जी की विद्वता : दशमेश पिता बाबा दीप सिंघ जी की विद्वता से भी बहुत प्रभावित थे। जब गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का भावार्थ किया था तो उस भावार्थ को सुनने वाले सबसे पहले ४८ सिक्खों में से बाबा दीप सिंघ जी भी एक थे।

धीरमलियों ने जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ देने से इनकार कर दिया तो दशमेश पिता ने आपको भाई मनी सिंघ जी के साथ मिलकर तलवंडी साबो में रहकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ तैयार करने का आदेश दिया।

यहां बाबा जी ने कई हस्तलिखित बीड़ें (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) तैयार कीं जो बाद में चार तख्त साहिबान पर भेजी गईं।

बाबा जी तलवंडी साबो में रहते हुए गुरबाणी पठन-पाठन और अध्ययन करवाने की सेवा भी करते रहे। इस प्रकार यहां गुरबाणी के अर्थ करने की एक टकसाल आरंभ हुई जो कालान्तर में 'दमदमी टकसाल' कहलाई।

योद्धा के रूप में : जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर पंजाब आये तब बाबा दीप सिंघ जी उनके साथ हो लिये और अनेक युद्धों में शामिल होकर अपनी वीरता के जौहर दिखाये।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद आप फिर तलवंडी साबो लौट आये और

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

गुरबाणी- अध्ययन व पठन-पाठन में जुट गये।

सन् १७३०-३२ ई. में 'बंदई खालसा' और 'तत्त खालसा' के आपसी विवाद को सुलझाने में भी आपने भाई मनी सिंघ जी के साथ मिलकर भूमिका निभाई।

सन् १७४८ ई. में जब 'मिसलों' की स्थापना हुई तो बाबा दीप सिंघ जी को 'शहीदां दी मिसल' का जत्थेदार नियुक्त किया गया।

श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा में बलिदान : सन् १७५७ ई. में अहमद शाह अब्दाली ने नगर श्री अमृतसर पर कब्ज़ा कर श्री हरिमंदर साहिब को ढहा दिया और अमृत-सरोवर को मिट्टी से भर दिया। यह खबर मिलते ही बाबा जी का खून खौल उठा। ७५ वर्ष की वृद्धावस्था होने के बावजूद भी आपने खंडा उठा लिया :

सीस सुधासर हेत कर,
देवेंगे हम जाए॥
कर अरदासा टुर पए,
सिंघ जी फतहि गजाए॥

तलवंडी साबो से चलते समय बाबा जी के साथ सिर्फ आठ सिक्ख थे, परंतु रास्ते में और सिक्खों के आकर मिलते रहने से श्री तरनतारन तक पहुंचते-पहुंचते सिक्खों की गिनती पांच हजार तक पहुंच गई। श्री तरनतारन से दस किलोमीटर दूर गोहलवड़ गांव के निकट सिक्खों और अफगान सिपहसालार जहान खान के लश्कर में जबरदस्त जंग शुरू हो गई। श्री हरिमंदर साहिब की बेअदबी से क्रोधित सिक्खों ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिये।

अफगानों को गाजर-मूली की तरह काटते हुए बाबा दीप सिंघ जी आगे बढ़ रहे थे कि तभी एक घातक वार बाबा जी की गर्दन पर पड़ा। बाबा जी की गर्दन कट गई और वे युद्ध-भूमि में गिर पड़े। यह देख कर एक सिक्ख पुकार उठा :

प्रण तुम्हारा दीप सिंघ रहयो।
गुरुपुर जाए सीस मै देहऊ।
मे ते दोए कोस इस ठै हऊ।

अर्थात् बाबा दीप सिंघ जी आपका प्रण तो गुरु-नगरी में जाकर शीश देने का था, पर वह तो अभी दो कोस दूर है।

यह सुनते ही बाबा दीप सिंघ जी फिर उठ खड़े हुए। दाहिने हाथ में खंडा लिया, बायें हाथ से शीश संभाला और पुनः युद्ध आरंभ कर दिया।

बाबा जी युद्ध करते-करते गुरु की नगरी तक जा पहुंचे। बाबा जी के साथ-साथ अनेक सिक्ख शहीद हो गये, परंतु श्री हरिमंदर साहिब की बेअदबी का बदला ले लिया गया।

बाबा दीप सिंघ जी का अंतिम संस्कार श्री अमृतसर नगर में चाटीविंड दरवाजे के पास गुरुद्वारा रामसर साहिब के निकट किया गया। आज इस पवित्र स्थान पर गुरुद्वारा श्री शहीदगंज साहिब सुशोभित है। बाबा जी ने श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में जहां शीश भेंट किया था, वहां भी गुरुद्वारा साहिब निर्मित है। बाबा जी का खंडा श्री अकाल तख्त साहिब में सुशोभित है।

दशम पातशाह का अनन्य श्रद्धालु सिक्ख भाई निगाहीआ सिंघ आलमगीर

*-सिमरजीत सिंघ**

पांच दरियाओं की धरती के शूरवीर बाशिंदे हमेशा ही हक-सच की लड़ाई लड़ने में अग्रिम कतार में रहे हैं। इस धरती पर पैदा हुए जांबाज योद्धा हमेशा जुल्म से टक्कर लेता तथा शहीदियां प्राप्त करते रहे हैं। आज दुनिया में दो प्रतिशत से भी कम-संख्या वाली 'सिक्ख कौम' दुनिया में सबसे ज्यादा शहीदियां प्राप्त करने वाली कौम है। इस कौम ने हमेशा ही अपना नाता हक-सच की लड़ाई लड़ने वाले शूरवीर योद्धाओं से बनाए रखा है। जहां यह कौम अपने तथा मानवता के अधिकारों के लिए जागृत है वहीं इसमें एक शिथिलता भी है कि यह अपने इतिहास को अच्छे ढंग से संभाल नहीं सकी। ऐसे में आज हम सिक्ख कौम के हजारों ही शहीदों के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने से वंचित रह गये हैं। सिक्ख इतिहास के जो मौलिक स्रोत हैं वे लगभग सब के सब गैर-सिक्खों द्वारा लिखे होने के कारण सिक्खी के बारे में सही जानकारी नहीं दे सके या उन्होंने उन योद्धाओं की कई बातों को अपने ढंग से व्याख्यात कर दिया। जो कथायें या इतिहास सिक्खों में सीना-ब-सीना चली आ रही बातों को सुनकर लिखा या उसमें उन्होंने श्रद्धामयी भावुकता में करामाती पक्ष को बहुत बड़े स्तर पर जोड़ दिया, जिस कारण ऐसे शूरवीरों की मेहनत को मात्र एक करामात के तौर पर ही जाना जाने लगा। आज हमारे पास जो इतिहास मौजूद है उसमें से हजारों ही जांबाज योद्धाओं का इतिहास गायब है। जो इतिहास हमारे पास मौजूद भी है, वो भी समय की मार तले आकर दिन-प्रतिदिन गायब होता जा रहा है; हमारे स्रोत खत्म होते जा रहे हैं।

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब हक-सच की लड़ाई लड़ते हुए श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ा तो उनके साथ इस लड़ाई में अपने-अपने ढंग से सैकड़ों शूरवीरों ने साथ दिया, जिसका मूल्य उनको अपना बलिदान देकर उतारना पड़ा। ऐसा ही एक शूरवीर गुरु-घर का श्रद्धालु था— भाई निगाहीआ सिंघ आलमगीर, जिसके बारे में ज्ञानी गिआन सिंघ ने 'तवारीख गुरू खालसा' में जिक्र किया है कि जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी चमकौर की गढ़ी से निकलकर माछीवाड़ा पहुंचे तो वहां भाई दया सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई गनी खां, भाई नबी खां तथा भाई मान सिंघ गुरु जी को एक पलंग पर बैठाकर 'उच्च के पीर' के रूप में लिये जा रहे थे। जब वे गांव आलमगीर के पास पहुंचे तो उनको रास्ते में भाई निगाहीआ सिंघ मिला, जो अपने पुत्र के साथ घोड़े बेचने जा रहा था। रास्ते में गुरु जी के दर्शन करके उनको एक घोड़ा सवारी करने के लिए पेश कर दिया गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए तथा पलंग छोड़कर घोड़े पर सवार हो गये। इस जगह पर आजकल आलीशान 'गुरुद्वारा मंजी साहिब' (आलमगीर) बना हुआ है जो कि महानगर लुधियाना से लगभग १०

**मुख्य संपादक व उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। फोन : ९८१४८-९८२२३*

किलोमीटर की दूरी पर लुधियाना-मलेरकोटला सड़क पर स्थित है। इस गांव के बारे में कहा जाता है कि १७वीं शताब्दी के आरंभ में ही यह गांव बस चुका था। मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही रिवायत के अनुसार गांव बीजा के पास सराय लशकरी खान कोटां का उद्घाटन करने के लिए मुगल सम्राट औरंगजेब आया था। जब औरंगजेब उद्घाटन करने के लिए आया तो गांव धांदरा के चौधरी ने उसके आगे फरियाद की कि नवाब लोधी उसकी लड़की के साथ जबरदस्ती शादी करना चाहता है। यह सुनने के उपरांत औरंगजेब ने शादी के दिन नवाब लोधी का सिर काट दिया। इस कारण इस बस्ती का नाम औरंगजेब आलमगीरी के नाम पर आलमगीर पड़ गया। गुरुद्वारा साहिब को सिक्ख राज्य के समय ७० बीघा जमीन भी दी गई थी। इस गुरुद्वारा साहिब में प्रति वर्ष १४, १५, १६ पौष वाले दिन दशम गुरु जी के आगमन की याद में जोड़-मेला (वर्षगांठ) होता है।

भाई निगाहीआ सिंघ की पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में शोध करने पर पता चला कि जिला लुधियाना में एक गांव गुज्जरवाल है। इस गांव का निवासी तोता जट्ट (गरेवाल) था। उसके तीन पुत्र थे— सेमा, जोधा तथा उगर। सेमा अपनी जवानी के दिनों में १६०० ई. के लगभग गांव गुज्जरवाल छोड़कर आलमगीर आ गया और जमीन खरीदकर यहां का निवासी बन गया। आज आलमगीर गांव के अधिकतर निवासियों को सेमे की औलाद ही माना जाता है। सेमे का पुत्र था— बलाकी और बलाकी का पुत्र था— लखमीर सिंघ तथा लखमीर सिंघ का पुत्र था— निगाहीआ सिंघ, जो अपने पांच भाइयों में सबसे बड़ा था। भाई निगाहीआ सिंघ के शेष चार भाई— सूरज मल, राम सिंघ, नूनी तथा मीठा थे। भाई निगाहीआ सिंघ के तीन पुत्र थे— सरदूल सिंघ, बाघा सिंघ तथा भागा सिंघ।

भाई निगाहीआ सिंघ के जन्म के बारे में ख्याल किया जाता है कि लखमीर सिंघ का विवाह मूलोवाल के भाई पिआरा सिंघ की पुत्री के साथ हुआ था। इस तरह भाई निगाहीआ सिंघ का ननिहाल गांव मूलोवाल है तथा भाई पिआरा सिंघ उनके नाना का नाम था, जो गुरु-घर का प्रेमी था। एक बार जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब मालवा देश की यात्रा करने आये तो वे घनौली, रोपड़, नंदपुर कलौड़, दादू माजरा, उगाणा, नौलक्खा, टहिलपुर तथा लंग आदि गांवों में लोगों को उपदेश देते हुए गांव मूलोवाल आ गये। भाई माईआ गोंदा यहां का पैंच, गुरु जी के पास रसद लेकर आया। गुरु जी ने पीने के लिए पानी मांगा तो भाई माईए ने विनती की कि पास वाले कुएं का पानी खारा एवं कड़वा है, मीठे पानी वाला कुआं थोड़ा दूर है, वहां से पानी ले आते हैं, किंतु गुरु जी ने खारे पानी वाले कुएं का पानी ही मंगवाकर पीया। फिर सारा गांव उसी कुएं से ही पानी भरने लगा। गुरु जी ने भाई माईए को सिरोपाउ दिया। अब उसकी संतान यहां रहती है। यहां पर आजकल गुरुद्वारा मंजी साहिब बना हुआ है, जो महाराजा करम सिंघ पटियाला वाले ने संवत् १८८२ में बनवाया था और इसके नाम जागीर भी लगाई थी। नवम् पातशाह २१ पौष, संवत् १७२० को गांव मूलोवाल आए थे। इस गांव का (हरीके गोत्र का जट्ट) भाई पिआरा सिंघ अपनी बेटी (जो लखमीर सिंघ आलमगीर की पत्नी थी) तथा अपनी पत्नी के साथ नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन करने के लिए आया तो उसकी बेटी ने गुरु जी से मांग की कि मेरा पहलौठा बेटा गुरु जी की सेवा में अपना जीवन अर्पित करे। गुरु

जी ने कहा कि इसी तरह होगा। यह बात ३-४ जनवरी, १६६४ ई. की है। इसी वर्ष के आखिरी महीनों में भाई निगाहीआ सिंघ का जन्म हुआ माना जाता है। इस तरह वे दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हम-उम्र ही थे।

चमकौर साहिब की जंग में दशम पातशाह के दोनों साहिबजादे तथा अन्य सिंघ शहीद हुए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा प्रकाशित विवरण के अनुसार चमकौर साहिब की रण-भूमि में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बड़े साहिबजादे— बाबा अजीत सिंघ जी तथा बाबा जुझार सिंघ जी के साथ पांच प्यारों में से भाई मोहकम सिंघ जी, भाई हिम्मत सिंघ जी तथा भाई साहिब सिंघ जी के अलावा निम्नलिखित सिंघ शामिल थे :—

१. भाई जवाहर सिंघ, श्री अमृतसर
२. भाई रतन सिंघ, माणकपुर
३. भाई माणक सिंघ, माणोके दुआबा
४. भाई क्रिपाल सिंघ, करतारपुर 'रावी'
५. भाई दिआल सिंघ, रामदास
६. भाई गुरदास सिंघ, श्री अमृतसर
७. भाई ठाकुर सिंघ छारा
८. भाई परेम सिंघ, मनीमाजरा
९. भाई हरदास सिंघ, ग्वालियर
१०. भाई संगो सिंघ, माछीवाड़ा
११. भाई निहाल सिंघ, माछीवाड़ा
१२. भाई महिताब सिंघ, रूपनगर
१३. भाई गुलाब सिंघ, माछीवाड़ा
१४. भाई खड़क सिंघ, रूपनगर
१५. भाई टेक सिंघ, रूपनगर
१६. भाई तुलसा सिंघ, रूपनगर
१७. भाई सहिज सिंघ, रूपनगर
१८. भाई चढ़त सिंघ, रूपनगर
१९. भाई झंडा सिंघ, रूपनगर
२०. भाई सुजान सिंघ, रूपनगर
२१. भाई गंडा सिंघ, पेशावर
२२. भाई निशान सिंघ, पेशावर
२३. भाई बिशन सिंघ, पेशावर
२४. भाई गुरदित्त सिंघ, पेशावर
२५. भाई करम सिंघ, भरतपुर
२६. भाई सुरजीत सिंघ, भरतपुर
२७. भाई नरैण सिंघ, भरतपुर
२८. भाई जैमल सिंघ, भरतपुर
२९. भाई गंगा सिंघ, जवालामुखी
३०. भाई शेर सिंघ, आलमगीर
३१. भाई सरदूल सिंघ, आलमगीर
३२. भाई सुक्खा सिंघ, आलमगीर
३३. भाई पंजाब सिंघ, खंडू
३४. भाई दमोदर सिंघ, खंडू
३५. भाई भगवान सिंघ, खंडू
३६. भाई सरूप सिंघ, काबुल
३७. भाई जवाला सिंघ, काबुल
३८. भाई संत सिंघ, पोठोहार
३९. भाई आलम सिंघ, पोठोहार
४०. भाई संगत सिंघ
४१. भाई मदन सिंघ
४२. भाई कोठा सिंघ

इन सिंघों ने जालिमों की फौज का डटकर मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त की। इनमें से भाई शेर सिंघ, भाई सरदूल सिंघ तथा भाई सुक्खा सिंघ शहीदी प्राप्त करने वाले गांव आलमगीर के निवासी थे। इनमें से भाई सरदूल सिंघ, भाई निगाहीआ सिंघ का बड़ा पुत्र था। इन शहीदों का अंतिम संस्कार

इकट्ठा वहीं जंग के मैदान में कर दिया गया था, जहां आजकल 'गुरुद्वारा कतलगढ़ साहिब' बना हुआ है। आलमगीर के निवासियों ने अपने गांव के शहीदों की यादगारें अपने गांव में भी बनाई हुई हैं।

जब दशम पातशाह १४ पौष, संवत् १७६१ मुताबिक २९ दिसंबर, १७०४ ई. को आलमगीर पहुंचे तो उस समय भाई निगाहीआ सिंघ को पता था कि साहिबजादों के साथ उसका बड़ा पुत्र भी शहीद हो चुका है तथा मुगल फौज दशम पातशाह का पीछा कर रही है। उसने गुरु साहिब को घोड़ा पेश किया कि वे जल्द से जल्द दूर निकल जायें। गांव आलमगीर में एक धर्मशाला है। गांव वालों के अनुसार यह भाई निगाहीआ सिंघ का ही घर था, जिसको धर्मशाला के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। खेद, गांव वालों ने भाई निगाहीआ सिंघ के घर को संभालने की कोई कोशिश नहीं की।

जब भाई निगाहीआ सिंघ ने गुरु साहिब को घोड़ा भेंट कर दिया तो गुरु साहिब घोड़े पर सवार होकर चले गये। उसके बाद मुगल फौज गुरु जी का पीछा करती हुई गांव में आ गई तथा उसने भाई निगाहीआ सिंघ के घर को घेरा डाल लिया। वह उस घेरे में से निकलकर अपने ननिहाल गांव मूलोवाल पहुंच गया तथा मुगल सेना ने उसका सारा परिवार कत्ल कर दिया। जब गुरु साहिब को पता चला कि भाई निगाहीआ सिंघ का सारा परिवार कत्ल कर दिया गया है तो गुरु साहिब ने रात को ही साधारण लिबास में गांव मूलोवाल पहुंचकर भाई निगाहीआ सिंघ को ढाढ़स बंधाया। इस तरह १५ पौष, संवत् १७६१ को भाई निगाहीआ सिंघ तथा उसके नाना भाई पिआरा सिंघ की गांव मूलोवाल में गुरु साहिब के साथ आखिरी मुलाकात हुई। इस संबंध में एक हुकमनामा भी मिलता है, जो २७ अगस्त, १९५२ ई. दिन बुधवार को गुरुद्वारा मंजी साहिब के नजदीक पश्चिम दिशा में सेवा करती संगत को मिला था। यह हुकमनामा खद्दर (खादी) के सफेद रुमाले में लपेटा हुआ था तथा मिट्टी के बर्तन में पड़ा था। बर्तन के मुंह पर काले पत्थर की कुछ राख मिली। यह हुकमनामा गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब पातशाही नौवीं-दसवीं, गांव मूलोवाल, जिला संगरूर द्वारा प्रकाशित करवाया माना जाता है। हो सकता है कि प्रिंटर्स से मात्राओं की या किसी अक्षर की गलती हो गई हो, परंतु उन्होंने अपने द्वारा असल की कापी ही बताई है। इसकी प्रमाणिकता संबंधी शोध करने की जरूरत है।

इस तरह अंदाजा लगाया जा सकता है कि जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भाई निगाहीआ सिंघ को आखिरी बार गांव मूलोवाल में जाकर मिले उस समय भाई साहिब की आयु लगभग ४० वर्ष की होगी। इसके पश्चात भाई निगाहीआ सिंघ कहां गये, कुछ पता नहीं चलता। यह भी एक शोध का विषय है। इस तरफ इतिहासकारों को ध्यान देना चाहिए। खालसा पंथ अपनी विरासत को संभालने में काफी ढीला है। यही कारण है कि पंथ के लिए अपने सारे परिवार की कुर्बानी देने वाले भाई निगाहीआ सिंघ के शेष जीवन की विस्तृत जानकारी नहीं मिलती। जो कौम अपनी विरासत एवं इतिहास को नहीं संभालती, उसका क्या हाल होता है, यह बताने की जरूरत नहीं। आओ, हम अपनी विरासत को संभालते हुए, अपने शहीदों के जीवन के बारे में शोध कर उनकी जानकारी सारी दुनिया में पहुंचायें ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां अपने इतिहास पर गर्व कर, अपना सिर ऊंचा करके चल सकें तथा अपने पूर्वजों के जीवन से दिशा लेकर हमेशा हक-सच से सिद्धांत पर डटी रहें!

परम आलौकिक रचना : श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब

- *डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब सिक्ख पंथ की आत्मा है। यह ऐसा पावन स्थान है जिसका नाम लेते ही गुरसिक्ख का मन श्रद्धा-भावना से भर उठता है और मस्तक पर इस आलौकिक स्थान से जुड़ा गौरवशाली इतिहास रौशन होने लगता है। श्री अमृतसर महानगर में स्थित इस आत्मिक सुख के केंद्र के दर्शन करना गुरसिक्ख के लिये सिक्खी को सम्पूर्णता में अनुभव करना है। यहां आना किसी ऐसे स्थान पर पहुंच जाना है जो युगों और काल के प्रभाव से मुक्त है; जहां से काल प्रभावित होता आया है और जीवन बदलते गये हैं। अब तक असंख्य लोग श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करने आये होंगे। वापिस लौटते हुए उन सबके मन में एक इच्छा अवश्य जाग्रत हुई होगी कि पुन: इस पुनीत स्थान का दर्शन करने का सौभाग्य मिले। भले ही मनुष्य यहां अनेक कामनायें लेकर आये किन्तु यहां पहुंचते ही श्री हरिमंदर साहिब में शीश निवाने की भावना सबसे पहले प्रबल हो उठती है। मनुष्य जब माथा टेकता है तो गुरु साहिबान के चरणों में, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हुक्म के आगे ही नहीं गुरु-इतिहास और गुरबाणी की महानता अक्षुण्ण रखने के अद्‌भुत संकल्प के आगे भी माथा टेकता है, जिससे गुरसिक्खी की नींव मजबूत होती है।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार नवंबर, १५०१ ई. में श्री गुरु नानक साहिब ने इस धरती को अपने चरण-कंवलों से पवित्र किया था। उस समय गुरु साहिब के साथ कई सिक्ख थे, जिसमें बाबा बुड्‌ढा जी भी थे। गुरु साहिब ने यहां बेरी के पेड़ के नीचे बैठ कर शबद उच्चारण किया। श्री हरिमंदर साहिब की रचना की पृष्ठभूमि में श्री गुरु नानक साहिब की कृपा अद्‌भुत है। गुरु साहिब ने यहां सूखे हुए ताल को रूहानी जल से भरपूर कर उसे जीवन-अमृत बना दिया। श्री गुरु अमरदास जी ने इस स्थान को चिन्हित करते हुए श्री गुरु रामदास जी को इसे धर्म के केंद्र के रूप में विकसित करने के निर्देश दिये थे। गुरुआई पर आसीन होने के बाद श्री गुरु रामदास जी ने यहां की पांच सौ बीघा जमीन खरीद कर सरोवर की खुदाई आरंभ कराई तथा अन्य निर्माण कराये। सरोवर को श्री गुरु अरजन साहिब ने पक्का करवाया और उसके मध्य श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के निर्माण का निर्णय लिया। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की नींव गुरु साहिब ने उस समय के प्रसिद्ध सूफी फकीर साँई मियां मीर जी से रखवाई। साँई जी से श्री हरिमंदर साहिब की नींव रखवाने के अनेक गूढ़ अर्थ थे। इससे श्री गुरु अरजन साहिब ने यह संदेश दिया कि सिक्ख सिद्धांत किसी धर्म या वर्ग के विरोध में नहीं है। सिक्ख पंथ मानव-समानता और प्रेम का पंथ है, जिसमें हर मनुष्य के आत्मिक उत्थान की संभावनायें हैं। यह संदेश भी था कि गुरु साहिबान के उपदेश समूची मानवता के लिये

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३ , ८४१७८-५२८९९*

हैं और इनमें एक-एक मनुष्य के कल्याण की भावना निहित है।

श्री गुरु अरजन साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब के निर्मण हेतु आस-पास की सतह से निचले तल का इस्तेमाल किया, ताकि परिसर में प्रविष्ट होते ही मन में विनम्रता प्रकट हो सके। चारों दिशाओं में प्रवेश द्वार बनाये गये, ताकि सभी धर्मों, वर्णों, वर्गों, जातियों की समानता व सम्मान का भाव मुखर हो सके। इसका पूरा निर्माण श्री गुरु अरजन साहिब की देखरेख में सम्पन्न हुआ, जिसमें बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी जैसे प्रमुख सिक्खों का सहयोग प्राप्त था। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के निर्माण से पूर्व श्री अमृतसर नगर बसना आरंभ हो चुका था। श्री गुरु रामदास जी ने ईमानदारी से किरत करने वाले लोगों को आमंत्रित कर यहां बसाया था, जिसमें भिन्न-भिन्न हस्तशिल्पी, श्रम करने वाले लोग शामिल थे। गुरु साहिब जहां उन्हें जीविकोपार्जन में सहायता करते, उनके आत्मिक उत्थान के लिये भी कृपा करते। एक ऐसा नगर विकसित हो रहा था जो हर छल, फरेब, ढोंग, आडंबर, झूठ से मुक्त था; जहां आध्यात्मिक सुख खुल कर बरस रहा था। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की रचना ने इसे शिखर पर पहुंचा दिया। श्री गुरु रामदास जी के बाद श्री गुरु अरजन साहिब ने भी श्री अमृतसर को अपना स्थाई निवास स्थान बना लिया था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन-कार्य पूरा होने के बाद श्री गुरु अरजन साहिब ने बड़े आदर और श्रद्धा के साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब को श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में प्रकाशित किया और बाबा बुड्ढा जी को मुख्य ग्रंथी नियुक्त किया। जितना सम्मान श्री गुरु अरजन साहिब को दिया जाता था उतना ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब को दिया जाने लगा। यह परंपरा स्वयं गुरु साहिब ने आरंभ की। सारी संगत हाथ जोड़ कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे खड़ी होती और माथा टेक कर अपनी श्रद्धा प्रकट करती। गुरबाणी-गायन की एक मर्यादा बनती गई जो आज तक चली आ रही है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होने से सरोवर के अमृत-जल में शबद-अमृत का आनन्ददायी सुमेल हुआ, जिसने धर्म-जगत का परिदृश्य बदल दिया। श्री हरिमंदर साहिब से तन और मन दोनों का पुण्य लाभ होने लगा। तन और मन की एकीकृत निर्मलता से गुरु-शबद का जाप होने लगा। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जब गुरुआई पर आसीन हुए, सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियां काफी बदल चुकी थीं। श्री गुरु अरजन साहिब की लाहौर में शहीदी के बाद सिक्ख पंथ में संगठनात्मक बदलाव की आवश्यकता महसूस की जाने लगी थी।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने शस्त्र धारण किये, फ़ौज का गठन किया और श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के ठीक सामने श्री अकाल तख़्त साहिब का निर्माण कराया, किन्तु श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की मर्यादा वैसी की वैसी ही रही, जो श्री गुरु अरजन साहिब के समय आरंभ हुई थी। उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया।

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब लाखों लोगों की श्रद्धा का केंद्र बन गया। यही कारण बहुत-से लोगों को चुभने लगा। इस पावन स्थान पर कई बार हमले किये गये। भवन पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया गया और सरोवर को पाट दिया गया। फिर भी श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब सिक्खों के मन में बसा हुआ था, जो पुनः-पुनः अपनी गरिमा स्थापित करता रहा। महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री

हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के भवन पर सोने की पर्त चढ़वा कर इसे अनूठी आभा प्रदान की थी। यह अलग इतिहास है जो अमृत-जल और अमृत-शबद के अमरत्व की पुष्टि करता है। इसकी एक-एक इंच भूमि अपने में सिक्खों के विश्वास और समर्पण की गौरवमयी गाथायें समेटे हुए है। ये गाथायें बोलती हैं और संवेदनाओं को जाग्रत करती हैं, इसीलिये जब कोई श्रद्धालु इसके परिसर में प्रवेश ही करता है तो उसकी आत्मिक अवस्था बदल जाती है।

किसी स्थान का बार-बार मिटाया जाना इतिहास हो सकता है, किन्तु हर बार उस स्थान का चौगुने जाहो-जलाल से पुन: सुशोभित हो जाना परमात्मा की महान कृपा के करिश्मे से कम नहीं है। यह महान कौतुक है जो बस, विस्माद, विस्माद, विस्माद ही पैदा करता है। कहते हैं कि अहमद शाह अब्दाली ने जब अंतिम बार भारत-आक्रमण के दौरान वापिस लौटते समय श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब को पुन: ध्वस्त करने के बारे में सोचा तो वह हिम्मत ही नहीं कर पाया। उसका इतना भी साहस नहीं हुआ कि वह श्री अमृतसर नगर में प्रवेश कर सके। सन् १९८४ में भी अमृत-सरोवर का जल खून से लाल हो गया और भारतीय सेना की गोलाबारी से भवन छलनी हुआ, मगर तब सेना भी इस पावन स्थान के अमरत्व को छू तक नहीं सकी थी। कुछ दिनों पूर्व विश्व के सारे देशों के राजदूतों ने एक साथ आकर इस स्थान पर शीश निवाया तो लगा कि पूरा संसार ही श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की शरण में आ पहुंचा है।

विश्व में अनगिनत धर्म-स्थान हैं, जहां किसी न किसी इष्ट की पूजा होती है। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में किसी इष्ट की पूजा नहीं होती। यहां निराकार परमात्मा का यश गायन होता है, मात्र गुरबाणी का कीर्तन होता है— *''सो सचु मंदरु जितु सच धिआईऐ॥''* परमात्मा का ध्यान करना, मन को उससे जोड़ना ही गुरसिक्ख की पूजा और भक्ति है। जिस स्थान पर मन परमात्मा से जुड़ रहा है वही सच्चा धर्म-स्थान है। श्री हरिमंदर साहिब वह पावन स्थान है जहां निराश, हताश हो चुके मन को विश्राम और सुख प्राप्त होता है :

दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम॥
हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम॥
सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइआ॥
मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ॥

(पन्ना ५४२)

उपरोक्त पावन शबद में श्री गुरु अरजन साहिब ने उस स्थान का वर्णन किया है जहां परमात्मा का दर्शन पाया जा सकता है। गुरु साहिब ने कहा कि इसके लिये सारी अज्ञानता, भ्रम, भटकन और दुविधा से मुक्त होना आवश्यक है। मन जब तक स्थिर नहीं होगा, एकाग्र होकर टिकेगा नहीं, तब तक वह परमात्मा से दूर ही रहेगा। मन का सहज अवस्था में आना आवश्यक है। सहज में आना परमात्मा की ओर कदम बढ़ाने जैसा है। परमात्मा ने सारी सृष्टि की रचना कर उसमें स्वयं को समाहित कर लिया है। वह सर्वव्यापक हो गया है। वह दृष्टिमान नहीं है, फिर भी है। परमात्मा के दर्शन करने के लिये गुरु के शबद की टेक लेनी पड़ती है। गुरसिक्ख जब गुरु-शबद पर जीवन टिका देता है तो परमात्मा को पा लेता है। श्री हरिमंदर साहिब में चल रहा शबद-कीर्तन परमात्मा से मेल की सामर्थ्य प्रदान करने वाला है। श्री

हरिमंदर साहिब वह स्थान है जिसे श्री गुरु अरजन साहिब ने स्वयं सजाया और जहां स्वयं जाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रथम बार प्रतिष्ठा की। यही कारण था कि परमात्मा यहां सदा के लिये प्रकट हो आया। यहां सदा ही परमात्मा की कृपा बरस रही है और हर शरणागत को निहाल कर रही है। प्रत्येक आने वाले का निराशा का अंधेरा दूर हो रहा है और दुख मिट रहे हैं। श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन साहिब जी स्वयं हर सिक्ख का परमात्मा से मेल करा रहे हैं— *''जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए॥''*

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब वास्तव में सच्चे धर्म का प्रकट रूप है। प्रत्येक सिक्ख सुबह और शाम को अपनी अरदास में श्री अमृतसर साहिब का स्मरण करता है और उसके दर्शन, स्नान का संकल्प धारण करता है। गुरसिक्ख का मन सदा श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के निकट वास करता है— *''गुर परसादी वेखु तू हरि मंदरु तेरै नालि॥''* जब गुरसिक्ख के मन में गुरु-शबद दृढ़ होता है तो उसका तन भी हरिमंदर बन जाता है— *''हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ॥''* श्री हरिमंदर साहिब का दर्शन तभी सफल है जब मन में श्री हरिमंदर साहिब बस जाये। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की शोभा गुरु-शबद से है। गुरु-शबद ही उसकी सच्ची स्वर्णिम आभा है— *''हरि मंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार॥''* श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में घटित होने वाला सबसे बड़ा चमत्कार विकारों, माया-मोह में लोहा हो गये मन को कंचन में बदल देने का है :

हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ॥
पारसि भेटिऐ कंचनु भइआ कीमति कही न जाइ॥
(पन्ना १३४६)

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के दर्शन की कामना ईश्वरीय प्रेरणा का फल है। एक बार दर्शन करने के बाद बार-बार दर्शन करने की प्रेरणा ईश्वर की दया है, जो उसकी कृपा से पूरी होती जाती है। इस प्रेरणा, दया और कृपा का मन्तव्य लोहा हो चुके मन को कंचन जैसा बना देना है। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब का हर बार का दर्शन जीवन में कुछ न कुछ बदलाव लाने वाला होता है। यह हो ही नहीं सकता कि कोई अमृत की हो रही बरखा में बिना भीगे लौट आये। कब सोना बन जायेगा यह लोहे की प्रकृति पर निर्भर करता है। मन कब भीग जाएगा यह मन की अवस्था पर निर्भर करता है। लोहा बदलता अवश्य है, मन भीगता अवश्य है। यह अध्यात्म का ही नहीं, जीवन के हर पक्ष का बैकुंठ है। बिना किसी भेदभाव के एक साथ एक कतार में दर्शन को खड़े लोग, पंगत में मिल कर लंगर छकते श्रद्धालु, भावना से सेवा करते स्त्री-पुरुष, बच्चे, वृद्ध एक ऐसे समाज का प्रतीक बन गये नजर आते हैं जहां कोई दुख नहीं, कोई क्लेश नहीं, सुख ही सुख है। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के बाहर भी इस भावना को बनाये रखना और इसका विस्तार करना हर उस श्रद्धालु का नैतिक दायित्व है, जिसने श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के दर्शन किये हैं। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के दर्शन-स्नान के साथ ही उस भावना को भी अपने जीवन का स्थायी हिस्सा बनाने की आवश्यकता है, जो हमें वहां जाने को प्रेरित करती है।

तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब

*-डॉ. बलबीर सिंघ**

धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टिकोण से पटना साहिब का अपना अलग महत्त्व है। पूर्व में इसे बालपोखरा, पुष्पपुर, कुसुमपुर, कुर्सपावती, मौर्यनगरवाया, पाटलिपुत्र आदि नामों से जाना जाता रहा है। मुगल काल में इसे अजीमाबाद का नाम भी दिया गया। इस भूमि को महात्मा बुद्ध और श्री महावीर ने अपने युगों में अपने कर्मों से पवित्र किया है। संसार-प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कौटिल्य तथा महान व्याकरणाचार्य पाणिनी ने अष्टाध्यापी की भी रचना इसी भूमि पर की थी। अजातशत्रु, अशोक और चंद्रगुप्त जैसे महान सम्राटों ने भी इसी धरती को अपने विशाल साम्राज्य का केंद्र बनाया था। सिक्ख समुदाय के लिए तो यह भूमि वंदनीय रही है। सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी पूरब दिशा की पहली यात्रा के समय सन् १५०७ ई. में इस भूमि को पवित्र किया। इस यात्रा के क्रम में वे अपने भक्त जैतामल की कुटिया (वर्तमान गुरुद्वारा गऊ घाट) में ठहरे थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब श्री गुरु नानक देव जी के मिशन का प्रचार करते हुए सन् १६६६ ई. में पटना साहिब आए। इनके साथ गुरु जी की मां माता नानकी जी, धर्म-पत्नी माता गुजरी जी तथा उनके भ्राता भाई किरपाल चंद के अलावा कई सिक्ख भी थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब कुछ समय बड़ी संगत, गऊ घाट ठहरने के पश्चात परिवार सहित भाई सालिस राय जौहरी की संगत में चले गए। उस समय इस संगत का संचालन भाई सालिस राय का परपोता घनश्याम कर रहा था। कुछ दिन ठहरने के बाद गुरु जी परिवार को यहीं छोड़कर बंगाल और आसाम की यात्रा पर निकल गए। मार्ग में मुंगेर से पटना साहिब की संगत के नाम एक 'हुकमनामा' (आदेश-पत्र) जारी करते हुए गुरु जी ने परिवार को यहीं रखने का आदेश देते हुए संगत को आशीर्वाद दिया। इसी 'हुकमनामे' में पटना साहिब को 'गुरु का घर' कहा गया।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब प्रचार-यात्रा के दौरान जब ढाका में थे तब पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश हुआ। दशम पातशाह के इस पावन जन्म-स्थान को सिक्ख पंथ के पांच तख्तों में दूसरा स्थान प्राप्त है। यह तख्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब नाम से विख्यात है। यहां दर्शनार्थ रखी वस्तुओं में गुरु जी का आसन, थंम साहिब, हरसिंगार का वृक्ष, गुरु-परिवार की चक्की और खिड़की साहिब है।

*२१२, ढुडियाल अपार्टमेंट, मधुबन चौक, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोन : ९८९९१-६१७७७

यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश पर्व मनाया जाता है।

सिक्ख धर्म के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की जन्म-स्थली होने के कारण भी पटना साहिब विश्व भर में प्रसिद्ध है। पटना साहिब में गुरु जी की यादें आज भी सुरक्षित हैं। गोबिंद घाट वो स्थान है जहां पर गुरु जी बाल्यकाल में साथियों के साथ तेग चलाना सीखते, किले बनाते, जंग में विजय प्राप्त करने के तरीके बताते तथा विजयी बालकों को इनाम देते थे। यहीं पर गुरु जी ने शिवदत्त को मानसिक शांति प्राप्त करने हेतु प्रभु की आराधना करने की प्रेरणा दी थी।

गुरुद्वारा बाल लीला साहिब या मैनी संगत वह पवित्र स्थल है जहां गुरु जी ने बाल्यकाल में अनेक कृत्य किए थे। फतह चंद मैनी स्थानीय राजा था। उसकी कोई संतान नहीं थी। रानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसा बाल प्राप्त होने का संकल्प करती हुई प्रतिदिन प्रभु के सामने प्रार्थना करती थी। अंतर्यामी गुरु जी एक दिन खेलते समय रानी की गोद में जाकर बैठ गए और उसे 'मां' कहकर पुकारा। रानी वात्सल्य से तुष्ट हुई और उन्हें अपना धर्म-पुत्र स्वीकार किया। खेलते-खेलते भूख लगने पर गुरु जी और उनके साथी बच्चों को रानी चने खाने के लिए दिया करती थी। इस गुरुद्वारे में आज भी घुंघनियों (उबले चने) का प्रसाद बंटता है। इस गुरुद्वारे में करीया का बारह महीने हरा-भरा रहने वाला वृक्ष है। इस पवित्र स्थान की इमारत की सेवा पहली बार स्थानीय राजा फतेह चंद मैनी ने करवाई थी। इसके लिए चारों ओर से दान आने लगे। जन्म-स्थान के नज़दीक वाली आवासीय इमारत को फुलकी स्टेट के राजा ने पहले ही बनवाया था। नई इमारत को बनाने में चीफ खालसा दीवान श्री अमृतसर, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी श्री अमृतसर तथा अन्य सिक्ख संस्थाओं एवं संगत का खास सहयोग प्राप्त हुआ। १० नवंबर, १९५४ ई. को कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश दिवस पर इस पांच-मंजिला इमारत की आधारशिला रखी गई। सिक्ख संगत तन, मन, धन से सेवा करने लगी। इस इमारत को बनाने में लगभग बीस लाख रुपए खर्च हुए। तीन साल के बाद सन् १९५७ ई. में पौष सुदी सप्तमी को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश दिवस पर इस इमारत का निर्माण-कार्य पूरा हुआ। इस पांच-मंजिला इमारत के नीचे तहखाना है। इस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ, गुरु जी के शस्त्र, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की खड़ाऊं, दसवें पातशाह का चोला (चोगा) आदि वस्तुएं संगत के दर्शन के लिए रखी हुई हैं। दूसरी मंजिल पर सिक्ख संग्रहालय (अजायब घर) है। तीसरी मंजिल पर अमृत-संचार तथा अनंद कारज (विवाह) कराने की व्यवस्था है। चौथी मंज़िल पर पुरातन हस्तलिखित और पत्थर की छाप की श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पुरानी बड़ी प्रति को सुरक्षित रखा गया है। इसी इमारत

की पहली मंज़िल तथा दूसरी मंज़िल के गुबंदों में संगत द्वारा रखवाए श्री अखंड पाठ साहिब का प्रवाह चलता रहता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पवित्र जन्म-स्थान तख्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब में निम्नलिखित वस्तुएं दर्शनार्थ रखी हुई हैं :—

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : इस पावन बीड़ पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तीर की नोक से केसर के साथ मूल-मंत्र लिखा था। इसके दर्शन गुरुपर्व और संक्रांति आदि दिनों में करवाए जाते हैं।

छवि साहिब : यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का युवावस्था का आयल पेंट से तैयार किया हुआ एक चित्र है।

पंघूड़ा साहिब : चार पांव का छोटा झूला, जो अब सोने की प्लेटों से मड़ा हुआ है। इस पर गुरु जी बाल्य-काल में बैठा करते थे।

गुरु जी की छोटी कृपाण : गुरु जी इसे बाल्य-काल में धारण किया करते थे।

गुरु जी के गुलेल की मिट्टी की गोली : इससे गुरु जी घड़े फोड़ा करते थे।

गुरु जी के तीर : इससे गुरु जी निशाना लगाया करते थे।

लोहे की छोटी चकरी : इसे गुरु जी अपने केशों में धारण किया करते थे।

लोहे का खंडा : इसे गुरु जी दसतार में सजाया करते थे।

छोटा खंजर : इसे गुरु जी कमरकस्से (कमरबंद) में धारण किया करते थे।

चंदन की लकड़ी का कंघा : इससे गुरु जी केश साफ किया करते थे।

लोहे के दो चक्र : इसे गुरु जी दसतार में सजाया करते थे।

हाथी-दांत की खड़ाऊं और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की चंदन की खड़ाऊं भी यहां पर सुरक्षित है।

भक्त कबीर जी की खड्डी, जिससे वे कपड़ा बुना करते थे।

इनके अतिरिक्त श्री गुरु तेग बहादर साहिब एवं माता सुंदरी जी के हुकमनामे की प्रति यहां सुरक्षित है। माता गुजरी जी का कुआं भी यहां दर्शनयोग्य है। एक इंच साईज़ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छोटी बीड़ भी यहां सुरक्षित है। महाराजा नेपाल द्वारा दिए गए ८० फीट लंबी साल की लकड़ी के निशान साहिब के अवशेष भी यहां उपलब्ध हैं।

तख्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब के दर्शन करने के लिए लाखों की संख्या में हर संप्रदाय के लोग यहां आते हैं और नत्मस्तक होते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बसंत राग बाणी में बसंत ऋतु का चित्रण

-डॉ. परमजीत कौर*

प्रकृति के साथ मनुष्य का अटूट सम्बंध है। प्रकृति के मनोरम दृश्य मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करते हैं तथा उद्विग्न मन को शांत करते हैं। प्रकृति का प्रत्येक दृश्य संवेदनशील मानव के हृदय-पटल पर अंकित हो जाता है। वह प्रकृति से प्रेरणा भी लेता है। क्रम से आती हुयी छ: ऋतुयें जीव को केवल नियमबद्ध जीवन तथा अनुशासन की शिक्षा ही नहीं देती बल्कि उत्पत्ति तथा विनाश के सिद्धांत की ओर संकेत भी करती हैं।

बसंत ऋतु सुन्दरता तथा प्रफुल्लता की प्रतीक मानी जाती है। इस ऋतु में सब कुछ मनमोहक लगता है। सारी वनस्पति हरी-भरी हो जाती है। जीव-जन्तु सब आह्लादित प्रतीत होते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बसंत राग में इसका सुंदर चित्रण किया गया है :

—माहा रुती महि सद बसंतु ॥
जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥ (पन्ना ११७२)
—बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥ (पन्ना ११७६)

बसंत ऋतु में विविध प्रकार के फूल खिलते हैं। सारा वातावरण मनोरम तथा सुहावना प्रतीत होता है :

—बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥
एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥ (पन्ना ११७६)
—बसंत रुति आई ॥ परफूलता रहे ॥ (पन्ना ११८५)

भंवरे फूलों से लदे हुये वृक्षों तथा हरी-भरी बेलों पर मंडराते हुये सुगन्धि का आनंद लेते हैं :

—ऐसी भवरा बासु ले ॥
तरवर फूले बन हरे ॥ (पन्ना ११९०)
—वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥
(पन्ना ११९३)

धरती, आकाश, प्रत्येक वस्तु चमकती हुयी दिखाई देती है :

मउली धरती मउलिआ अकासु ॥
घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥ (पन्ना ११९३)

इस ऋतु में पेड़ों की छाया घनी तथा सुखदायी हो जाती है :

छाव घणी फूली बनराइ ॥ (पन्ना ११७३)

प्रभु से प्रेम करने वाले जीव कुदरत में परमात्मा को देखते हैं। बसंत ऋतु के मनोरम दृश्यों से अभिभूत होकर जीव परमात्मा के प्रेम-रंग में रंगे हुये आत्मिक आनन्द का अनुभव करते हैं :

—रुति आईले सरस बसंत माहि ॥
रंगि राते रवहि सि तेरै चाइ ॥ (पन्ना ११६८)
—इतु मनि मउलिऐ भइआ अनंदु ॥
अंम्रित फलु पाइआ नामु गोबिंद ॥ (पन्ना ११७६)
—मनि बसंतु हरे सभि लोइ ॥
फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ ॥
(पन्ना ११७६)
—माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥
परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥
(पन्ना ११६८)

गुरु साहिबान ने बसंतु ऋतु के चित्रण के माध्यम से मनुष्य की अन्त: प्रकृति का भी चित्रण किया है। श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार जैसे पानी से वृक्षों

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६

की शुष्कता समाप्त हो जाती है, वे हरे-भरे तथा कोमल हो जाते हैं, वैसे ही जब मनुष्य साधसंगति के सम्पर्क में आता है तो उसका अहंकार दूर हो जाता है। उसके अन्दर की कठोरता समाप्त हो जाती है। उसके स्वभाव में विनम्रता आ जाती है :

मिलि पाणी जिउ हरे बूट ॥
साधसंगति तिउ हउमै छूट ॥ (पन्ना ११८१)

जैसे बसंत ऋतु में चारों तरफ फूल खिलते हैं वैसे ही अहंकार के दूर होने पर मन-तन प्रफुल्लित हो जाता है :

—हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥
(पन्ना ११९३)

—मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥
सूकै नाही छाव धूप ॥ (पन्ना ११८०)
सगली रूती हरिआ होइ ॥
सद बंसत गुर मिले देव ॥

—देखु फूल फूल फूलै ॥
अहं तिआगि तिआगे ॥
चरन कमल पागे ॥
तुम मिलहु प्रभ सभागे ॥ (पन्ना ११८५)

श्री गुरु अमरदास जी समझाते हुये फरमान करते हैं कि जो नाम जपते हैं, उन मनुष्यों के जीवन में सदा बसंत वाला उत्साह तथा प्रफुल्लता पैदा हो जाती है। उनका शरीर रूपी वृक्ष हरि-नाम का फल प्राप्त कर लेता है :

—मनि बसंतु तनु मनु हरिआ होइ ॥
नानक इहु तनु बिरखु राम नामु फलु पाए सोइ ॥
(पन्ना ११७६)

—इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ॥
हरि हरि नामु जपै दिनु राती
गुरमुखि हउमै कढै धोइ ॥ (पन्ना ११७७)

रूपक अलंकार के माध्यम से बाहरी प्रकृति तथा अन्त: प्रकृति का समन्वय दर्शनीय है।

श्री गुरु नानक देव जी विस्तार से समझाते हैं कि जैसे बसंत में वृक्षों पर नई शाखायें उगती हैं, फूल खिलते हैं, फल लगते हैं, घनी छाया होती है, वैसे ही हे मन! यदि तू अहं को छोड़कर शुभ कर्म करने लग जाए तो तेरे अंदर ऐसा वृक्ष लग जायेगा जिस पर प्रभु के नाम-सिमरन की शाखायें आयेंगी, धार्मिक जीवन का फूल प्रस्फुटित होगा, प्रभु-प्रेम के ज्ञान का फल लगेगा, परमात्मा की प्राप्ति उस वृक्ष के पत्ते होंगे तथा विनम्रता छाया होगी :

करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥
पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥
(पन्ना ११६८)

जब बसंत ऋतु आती है तो पेड़ों पर नये पत्ते आ जाते हैं, छाया घनी हो जाती है। उनकी सुगन्ध तथा कोमलता मन को हर लेती है। कई वृक्ष ऐसे भी होते हैं जो बसंत आने पर भी सूखे रहते हैं :

सघन बासु कूले ॥
इकि रहे सूकि कठूले ॥ (पन्ना ११८५)

इसी तरह चाहे आत्मिक जीवन की प्रफुल्लता प्राप्त करने वाली मानव जीवन रूपी ऋतु प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त होती है, लेकिन इस ऋतु में अर्थात् मानव देह प्राप्त करके भी मनमुख जीव आत्मिक आनन्द से वंचित रहते हैं। श्री गुरु अमरदास जी के मतानुसार अपने मन के पीछे चलने वाले मायाधारी मानों वे वृक्ष हैं जो खड़े-खड़े ही सूख जाते हैं। उन पर न फल लगता है, न ही वे छायादार होते हैं :

—इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ॥
(पन्ना ११७६)

—मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिंना छाउ ॥
तिंना पासि न बैसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥

कटीअहि तै नित जालीअहि ओना सबदु न नाउ ॥

(पन्ना ६६)

जैसे जल मिलने से वृक्षों पर हरियाली आ जाती है वैसे ही परमात्मा का नाम-सिमरन करने से मनुष्य का आत्मिक जीवन प्रफुल्लित हो जाता है :

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥
करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ (पन्ना ११९३)

ऐसे मनुष्यों के जीवन में सदा बसंत ऋतु वाला उल्लास बना रहता है :

—सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ॥
राम नामु राखै उर धारे ॥ (पन्ना ११७६)
—तिन्ह बसंतु जो हरि गुण गाइ ॥
पूरै भागि हरि भगति कराइ ॥ (पन्ना ११७६)

बसंत ऋतु आत्मिक आनन्द की प्रतीक मानी गयी है। यह आनंद हृदय में सदा बना रहता है :

आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥
गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥ (पन्ना ११८०)

यह आत्मिक आनंद उसे प्राप्त होता है जिस पर प्रभु कृपा करते हैं :

तिसु बसंतु जिसु प्रभु क्रिपालु ॥
तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआलु ॥
मंगलु तिस कै जिसु एकु कामु ॥
तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु ॥१ ॥
ग्रिहि ता के बसंतु गनी ॥
जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥ (पन्ना ११८०)

परमात्मा जिस जीव पर दया करता है, उसके हृदय में परमात्मा के गुण-कीर्तन का सदा चाव बना रहता है। श्री गुरु अरजन देव जी बसंत ऋतु के माध्यम से सचेत कर रहे हैं कि जैसे केवल बसंत ऋतु में ही प्रकृति विकसित तथा प्रफुल्लित होती है वैसे ही परमात्मा की प्राप्ति का समय केवल मानव-जन्म ही है। गुरु साहिब समझा रहे हैं— हे मन! अब मानव जीवन के प्राप्त होने पर नाम बीजने का समय तुझे मिला है। अपने हृदय के खेत में केवल हरि-नाम का बीज बो। मानव-जन्म के बिना किसी अन्य जन्म में परमात्मा का नाम नहीं बोया जा सकता अर्थात् नाम-सिमरन नहीं किया जा सकता :

अब कलू आइओ रे ॥
इकु नामु बोवहु बोवहु ॥
अन रूति नाही नाही ॥
मतु भरमि भूलहु भूलहु ॥
गुर मिले हरि पाए ॥
जिसु मसतकि है लेखा ॥
मन रुति नाम रे ॥
गुन कहे नानक हरि हरे हरि हरे ॥ (पन्ना ११८५)

ये दुनिया वाली ऋतुएं तो सदा आने-जाने वाली हैं। जब बसंत ऋतु का समय समाप्त हो जाता है तो वनस्पति में भी शुष्कता आनी प्रारम्भ हो जाती है। श्री गुरु नानक देव जी बता रहे हैं कि जो गुरमति के अनुसार जीवन-यापन करते हुये प्रभु-प्रेम में लीन रहते हैं उनके आत्मिक जीवन की प्रफुल्लता, उनके हृदय का उल्लास चिरस्थायी होता है :

माहा रुती आवणा वेखहु करम कमाइ ॥
नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥

(पन्ना ११६८)

श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है :

साचि रते तिन सद बसंत ॥
मनु तनु हरिआ रवि गुण गुविंद ॥
बिनु नावै सूका संसारु ॥
अगनि त्रिसना जलै वारो वार ॥ (पन्ना ११७३)

चाबियों का मोर्चा

-डॉ. जगजीत कौर*

गुरु के सिक्खों का गौरवमयी इतिहास कुर्बानियों और शहादतों का इतिहास है, जिसकी मूल प्रेरणा महान गुरु साहिबान, गुरु-साहिबज़ादों और गुरु-महिलों के त्याग, बलिदान, शहादतों पर आधारित है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद समय की आततायी जालिम मुगल सत्ता ने सिक्खों को असहनीय कष्ट देने शुरू कर दिए और निश्चय कर लिया कि सिक्खों का नामोनिशान मिटा देना है। सिक्ख नगर-गांव छोड़ कर जंगलों में छुप-छुप कर रहने लगे। उन्हें महान गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन से वंचित रखा गया। ऐसी स्थिति में गुरुधामों की सेवा-संभाल निरमले साधुओं और उदासी सम्प्रदाय के साधु-महन्तों ने अपने कब्जे में ले ली। गुरुधामों में ये लोग अपनी मनमर्जी से मर्यादा चलाने लगे। कुछ समय बाद जब सिक्ख संभले और मिसलें कायम की गईं तो महाराजा रणजीत सिंघ के नेतृत्व में शक्तिशाली सिक्ख राज्य कायम हुआ।

महाराजा साहिब ने गुरुद्वारों की सेवा-संभाल की ओर ध्यान दिया और गुरुद्वारों के नाम बड़ी-बड़ी जागीरें लगवा दीं। जागीरें मिलने पर गुरुधामों पर कब्जा किए बैठे महन्तों का लालच और बढ़ गया। वे स्वयं को इन जागीरों, गुरुद्वारों का व्यक्तिगत मालिक समझने लगे। सिक्ख अपनी सैनिक शक्ति और राजनीतिक शक्ति बढ़ाने में लगे रहे। सिक्खों की बहादुरी का सिक्का पूरे भारतवासी मानने लगे। सिक्खों ने कई लड़ाइयां लड़कर अहमद शाह अब्दाली और अफगानों को देश से दूर भगाया और शक्तिशाली सिक्ख राज्य कायम किया। इस बीच अंग्रेज़ों का भारत के विभिन्न भागों पर कब्जा हो गया। बंगाल को कब्जे में लेकर, मराठों को परास्त कर अंग्रेजों ने मराठा शक्ति को भी नष्ट कर दिया। सबसे अंत में महाराजा रणजीत सिंघ के निधन के बाद डोगरों की स्वार्थ-बुद्धि के कारण रचे षड्यन्त्रों से सन् १८४९ ई. में अंग्रेजों का पंजाब पर भी कब्जा हो गया। उन्हें यह बताया गया कि सिक्खों की ताकत के प्रेरणा-स्रोत इनके गुरुधाम हैं। यदि गुरुधामों पर से सिक्खों की ताकत कम कर दी जाये तो इनकी ताकत भी खत्म की जा सकती है, इसलिए उन्होंने स्वार्थी महन्तों को शह देनी शुरू कर दी। महन्त गुरुधामों में अनैतिक कार्य करने लगे। नशे-पान, नाच-गान, खुलेआम ऐयाशी गुरुधामों की पवित्र परिक्रमा में होने लगी। महन्त गुरुधामों की जायदाद को निजी जायदाद समझने लगे। दिल्ली के गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब की जमीन संगत को बताए बिना महंत ने बेच डाली। गुरुद्वारा बाबा फूला सिंघ जी के महन्त हरनाम

*१८०१-सी, मिशन कंपाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर-२४७००१, फोन : ९४१२४-८०२६६

सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब की जमीन बेच दी। श्री दरबार साहिब तरनतारन के महन्त ने गुरुद्वारा साहिब का बुंगा अंग्रेज़ पादरी को बेच दिया। गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री ननकाणा साहिब का महन्त नारायण दास था। इसने कई गुरुद्वारा साहिब की जमीन का इंद्राज अपने नाम करवा लिया। यह महन्त गुरुद्वारा जन्म-स्थान पर खुलेआम नशे-पान करता। इसी बीच एक सिंधी सेशन जज रिटायर होकर परिवार सहित गुरु-दर्शन को आया तो रात के अन्धेरे में उसकी १३-१४ साल की कन्या का सतीत्व भंग महन्त ने नशा-पान कर किया। लड़की को बड़ी मुश्किल से गुण्डों के कब्जे से छुड़ाया गया। तरनतारन दरबार में छः सात स्त्रियों का सतीत्व भंग किया गया। औरतों-कन्याओं का गुरुधामों में आना मुश्किल हो गया। यह सब अंग्रेजों की शह पर हो रहा था। महन्तों को भ्रष्ट करने में अंग्रेजों की ओर से सभी प्रकार की सहायता दी जा रही थी।

इधर श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर पर भी अंग्रेजों की भ्रष्ट नज़र लगी हुई थी। १८४७ ई. में लाहौर सरकार की ओर से श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर को कड़ाह प्रशाद के लिए ग्यारह रुपए रोज़ाना की धनराशि मिलती थी। उसे घटा कर अंग्रेजों ने तीन रुपए कर दिया। जलंधर- दोआबा के कमिश्नर जहान लारेंस ने श्री दरबार साहिब की जागीरों का सर्वेक्षण करवाया तो उसकी आँखें मानों फट गईं। १८३२ ई. से ग्रंथी मक्खण सिंघ सेवा निभा रहा था। उसे अपने वश में करने के लिए इन सारी जागीरों को ग्रंथी के नाम उम्र भर के लिए कर दिया। १८४८ ई. में अंग्रेज़-परस्त जोध सिंघ की डेरा बाबा नानक में कार्यरत अदालती नायब की तबदीली श्री अमृतसर कर दी। बाबा लछमण सिंघ पर दोष लगाकर कि इनका कार्य ठीक नहीं है, इन्हें निकाल दिया। इनके स्थान पर जोध सिंघ को नियुक्त कर दिया। इस प्रकार श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर को अपने कब्जे में करने की नियत से यहां नियुक्तियां अपने ढंग से करने लगे। १८४९ ई. में जब अंग्रेज़ों का पंजाब पर पूरी तरह से कब्जा हो गया तो इन्होंने श्री दरबार साहिब पर दीपमाला करवाई। जलियां वाला बाग में सन् १९१९ ई. में जब निहत्थे भारतीयों को गोलियों से भूना गया, जिसमें अधिकांश सिक्ख थे, तो गोलियों से भूनने वाले जनरल डायर को श्री दरबार साहिब के ग्रंथियों से सिरोपा दिलवाया गया। तब धीरे-धीरे श्री दरबार साहिब पर कब्जा करते हुए श्री दरबार साहिब के तोशेखाने की चाबियां अंग्रेजों ने अपने कब्जे में कर ली।

१९२० ई. की अप्रैल को पंजाब के गुजरात के डिंगा नामक नगर में सिक्ख एजूकेशन कान्फ्रेन्स आयोजित की गई। यह सिंधी जज वहां पहुंचा और उसने वहां गुहार लगाई। अपनी पुत्री के साथ हुए कुकर्म के बारे में दुखी होकर बताया और हुंकार भरा कि "सिक्ख मर गए हैं या जिंदा हैं! गुरुधामों में ऐसे कुकर्म हो रहे हैं।" तब सन् १९२० ई. में गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना की गई। गुरुधामों के प्रबंध सुधार हेतु महन्तों व अंग्रेज़ों से कब्जा छुड़ाने के प्रोग्राम बनाए गए। इसी क्रम में श्री अमृतसर के तोशेखाने की चाबियों को लेने का भी विचार किया गया और इसके लिए

जो संघर्ष किया गया उसे 'चाबियों का मोर्चा' कहते हैं। यह मोर्चा १९ अक्तूबर, १९२१ ई. से लेकर १० जनवरी, १९२२ ई. तक चला। श्री दरबार साहिब का सरपरस्त अंग्रेजों ने सरदार सुंदर सिंघ को बना रखा था। अंग्रेज़ सरकार ने श्री दरबार साहिब का प्रबंध तो सिक्खों के हवाले २० अप्रैल, १९२१ ई. को कर दिया था, परंतु तोशेखाने की चाबियां प्रबंधक कमेटी को नहीं दी गई थीं। ये चाबियां स. सुंदर सिंघ से श्री अमृतसर के ज़िला मजिस्ट्रेट ने लाला अमरनाथ के जरिए ले ली थीं। लाला अमरनाथ ई. ए. सी. थे। यही विशेष संघर्ष का कारण बना। सरदार सुंदर सिंघ ने इस्तीफा दे दिया तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स. खड़क सिंघ को कमेटी का प्रधान चुना। स. खड़क सिंघ के नेतृत्व में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इकट्ठ किया और उसमें २९ अक्तूबर, १९२१ ई. को सरकार से चाबियों की मांग की गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सरकार ने अवैध मानते हुए इसे सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था मानने से इनकार करते हुए चाबियां देने से मना कर दिया।

इस पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ११ नवंबर, १९२१ ई. को प्रस्ताव पास किया और सरकार से मेल-मिलाप न रखने का फैसला किया। यह भी तय किया कि जब प्रिंस ऑफ वेल्स श्री अमृतसर आया तो उसका सिक्खों द्वारा बायकाट किया जाए। श्री अमृतसर शहर में हड़ताल की जाए और उनका प्रशाद किसी भी गुरुद्वारा साहिब में चढ़ाना स्वीकार न किया जाये। सरकार ने कैप्टन बहादर सिंघ को श्री दरबार साहिब का नया सरबराह नियुक्त कर दिया। प्रबंधक कमेटी ने ११ नवंबर, १९२१ ई. को फैसला किया कि नए सरबराह को श्री दरबार साहिब के प्रबंध में दखल न देने दिया जाये। अतः १५ नवंबर, १९२१ ई. को जब श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश गुरुपर्व मनाया जा रहा था तो नया सरबराह आया, मगर किसी भी सिक्ख ने उसे श्री दरबार साहिब के निकट नहीं आने दिया। २६ नवंबर, १९२१ ई. को अकालियों की ओर से एक जलसा अजनाला में रखा गया, जिसमें सरकार और अकालियों को अपना-अपना पक्ष रखने का निर्णय लिया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने भी २६ नवंबर, १९२१ ई. को अजनाला में ही एक कान्फ्रेंस करने का निर्णय लिया। सरकार ने इसे रोकने के लिए जलसों पर पाबंदी लगा दी। २६ नवंबर, १९२१ ई. को सरकार ने अपना जलसा किया। इधर अकालियों ने भी अपना जलसा किया, जिस पर मुख्य प्रबंधक सिक्खों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। ये मुख्य गुरसिक्ख दस थे— सरदार दान सिंघ, स. तेजा सिंघ, स. जसवंत सिंघ, पंडित दीना नाथ संपादक 'दरद', बाबा खड़क सिंघ, स. महिताब सिंघ, स. सुंदर सिंघ लायलपुरी, स. तेजा सिंघ समुंदरी, स. अमर सिंघ झबाल, मास्टर तारा सिंघ।

इन गिरफ्तार सिंघों की प्रतिक्रिया स्वरूप मोर्चा लहर और उग्र हो उठी। २७ नवंबर को जगह-जगह रोष दिवस मनाए गए और रोष दीवान सजाए गए। गुरु का बाग और श्री अकाल तख्त साहिब पर प्रतिदिन दीवान सजने लगे। सरकार ने सिक्खों को प्रतिदिन गिरफ्तार कर जेल

भेजना शुरू कर दिया। अजनाला से जो दस सिक्ख गिरफ्तार किए गए थे, उन पर मुकद्दमा दायर किया गया। उन्हें छः-छः महीने की सजा— कैद और जुर्माना लगाया गया।

इसके विरोध में गुरु के कई समर्पित सिक्खों ने श्री अकाल तख्त साहिब पर पेश होकर गिरफ्तार होना स्वीकार किया। जनवरी प्रथम, १९२२ ई. को कई सिक्ख संस्थाओं ने कान्फ्रेंस की, जिसमें सरकार के विरुद्ध प्रस्ताव पास किए गए। ६ दिसंबर, १९२१ ई. को खालसा कॉलेज श्री अमृतसर के प्रोफेसर साहिबान ने प्रस्ताव पास किया कि

१. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्ख जत्थेबंदी है। चाबियां इन्हें सौंपी जाएं।

२. चाबियों सम्बंधी लगाए गए दीवान धार्मिक दीवान हैं। इस पर आक्षेप नहीं लगाए जा सकते।

इस तथ्य का जमकर प्रचार हुआ। विभिन्न अखबारों में इसका समाचार छपा। पंजाब और पंजाब से बाहर भारत के अन्य भागों में भी यह समाचार फैला, जिससे अंग्रेज़ सरकार को विरोध सहना पड़ा। अंत में ५ जनवरी, १९२२ ई. को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश पर्व के दिन अंग्रेजों ने प्रबंधक कमेटी को चाबियां देने का निर्णय लिया। अकालियों ने चाबियां लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि पहले मोर्चों में कैद सभी जेल के कैदियों को रिहा किया जाये। तब ११ जनवरी, १९२२ ई. को सरकार ने सर जॉन ऐनार्ड के माध्यम से पंजाब कौंसिल में मोर्चों में कैद किए सभी कैदियों को रिहा करने की घोषणा कर दी। अंग्रेज़ सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को प्रमाणिक संस्था मान लिया। १९ जनवरी, १९२२ ई. को श्री अकाल तख्त साहिब के सामने भारी दीवान सजाया गया। इसमें सरकार ने अपने प्रतिनिधि भेजकर तोशेखाने की चाबियां बाबा खड़क सिंघ को सौंप दी। बाबा जी ने चाबियां लेने से पूर्व उपस्थित संगत में घोषणा की कि वे चाबियां तभी लेंगे जब गुरु की संगत की सहमति होगी। संगत ने पूर्ण उत्साह से जैकारे गजाए। सारा वातावरण गुंजायमान हो उठा। यह संगत की जीत थी। भारतीय आजादी का प्रथम आगाज़ था। इस अवसर पर स्वयं महात्मा गांधी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को बधाई दी। देश के अन्य महान नेताओं ने भी बधाई के तार भेजे। यह वस्तुतः सिक्खों की बहुत बड़ी जीत थी। मोर्चा भी बहुत लम्बे समय तक चला। १९ अक्तूबर, १९२१ ई. से १० जनवरी, १९२२ ई. तक इसमें कई प्रमुख सिक्ख सज्जनों की भूमिका अहम रही, जिनमें तीन भाई एक ही परिवार के स. अमर सिंघ, स. सुरमुख सिंघ और स. जसवंत सिंघ तरनतारन ज़िले के झबाल निवासी सरदार गोपाल सिंघ के घर क्रमश : १८८८, १८९३ और १८९८ ई. में जन्मे थे। तीनों भाई चाबियों का मोर्चा, गुरु के बाग का मोर्चा, सिंघ सभा लहर में सक्रिय भाग लेकर जेल जाते रहे।

गुरबाणी चिंतनधारा . . . १२६

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥
गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥
गुरमुखि निरमल हरि गुण गावै ॥
गुरमुखि पवित्रु परम पदु पावै ॥
गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥
नानक गुरमुखि साचि समावै ॥२७॥ (पन्ना ९४१)

२७वीं पउड़ी से ३१वीं पउड़ी तक श्री गुरु नानक पातशाह जी ने गुरमुख व्यक्ति के विविध गुणों का सुन्दर वर्णन किया है और साथ ही प्रत्येक इन्सान के इस जगत में आने के परम उद्देश्य को भी समझाया है कि किस प्रकार हमें इस बेशकीमती मानव जीवन को सफल बनाना है।

२७वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलने वाला मनुष्य गुरु-शब्द की सहायता से अपने इस भटकते मन को सुंदर आकृति का बना लेता है और यह तभी सम्भव होता है जब वह परमेश्वर के भय-अदब में रहता है अर्थात् परम पिता परमेश्वर अकाल पुरख वाहिगुरु के भय में रहने के फलस्वरूप ही इस भटकते मन की आकृति सही रूप धारण करती है। ईश्वर का भय ही मन को सही मार्ग पर चलाता है। परमेश्वर के भय में सुंदर आकार वाला मन प्रभु के निर्मल गुणों का गायन करता है। प्रभु की महिमा का गान करते हुए मन उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है। गुरमुख व्यक्ति का रोम-रोम प्रभु की आराधना करता है अर्थात् तन-मन से श्वास-ग्रास प्रभु का सिमरन करता रहता है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरमुख सदैव कायम रहने वाले पारब्रह्म परमेश्वर में समा जाता है अर्थात् लीन हो जाता है।

गुरमुख व्यक्ति के विविध गुणों का संकेत करते हुए पहली पंक्ति में गुरु साहिब ने यह स्पष्ट किया है कि गुरमुख व्यक्ति सत्य स्वरूप परमेश्वर के भय में बना रहता है तथा गुरु की बाणी के माध्यम से असाध्य मन को साध लेता है। यहां गुरु साहिब एक गूढ़ रहस्य को उजागर कर रहे हैं कि परमेश्वर का भय जीव को प्रभु जैसा निर्भय बना देता है। प्रभु का भय मन में बने रहना, यह मुमकिन है गुरु की कृपा से, तभी इस मन की आकृति सर्वोत्तम हो सकती है। यहां यह भी समझ लेना जरूरी है कि जहां ईश्वर का भय मनुष्य को निर्भय स्वरूप कर देता है, वहीं दुनिया का भय मनुष्य को कायर अथवा कर्मकांडी बना देता है। ऐसे व्यक्ति को हर दम यह भय बना रहता है कि लोग क्या कहेंगे, इसलिए लोकाचार के लिए वह कुछ करने के बावजूद हर वक्त दुविधा में रहता है और इस आशय से वह अपना कुछ भी संवार नहीं सकता। इसके विपरीत ईश्वर के

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९१२९७-६२५२३*

भय-अदब में रहते हुए जीव ईश्वर की भक्ति में जुड़ता है, जिसके फलस्वरूप उसे आत्मिक बल मिलता है और उसका लोक-परलोक सफल हो जाता है। वह निर्मल हृदय से, रोम-रोम से निर्भय स्वरूप परमेश्वर का गुण-गायन करता है और 'जैसी संगत वैसी रंगत' के अनुसार निर्भय स्वरूप प्रभु में गुरमुख व्यक्ति लीन हो जाता है।

गुरमुखि परचै बेद बीचारी ॥
गुरमुखि परचै तरीऐ तारी ॥
गुरमुखि परचै सु सबदि गिआनी ॥
गुरमुखि परचै अंतर बिधि जानी ॥
गुरमुखि पाईऐ अलख अपारु ॥
नानक गुरमुखि मुकति दुआरु ॥२८ ॥ (पन्ना ९४१)

२८वीं पउड़ी में भी गुरु पातशाह ने गुरमुख व्यक्ति के विविध गुणों को उजागर किया है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जब गुरमुख व्यक्ति का मन गुरु-शबद के साथ योग बना लेता है तो समझो वह वेदों का ज्ञाता हो जाता है अर्थात् गुरु-शबद में लिव जुड़ने के उपरान्त किसी वेद-ग्रंथ के ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। गुरमुख व्यक्ति अन्तरात्मा से सन्तुष्ट हो जाता है। गुरु-शबद का चिंतन उसे पूर्णतया संतुष्टि प्रदान कर देता है। गुरमुख के रूप में संतुष्ट व्यक्ति इस संसार रूपी भवसागर को सहजता से पार कर लेता है। गुरमुख बनकर संतुष्ट हुआ व्यक्ति शबद के माध्यम से ज्ञानवान (सूझवान) हो जाता है। यह ज्ञान आत्मिक ज्ञान है, जिसके फलस्वरूप परमेश्वर से जान-पहचान हो जाती है और आन्तरिक विधि का ज्ञान हासिल हो जाता है। गुरमुख बनकर ही परमेश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरमुख होना ही मुक्ति का द्वार है।

गुरबाणी में बहुतायत से गुरमुख के गुणों का चित्रण किया गया है। गुरमुख की अवस्था बहुत ऊंची हो जाती है। समर्पित भाव से वह अपने जीवन की डोर परमेश्वर के हाथों में सौंप देता है। उसे वह मंजिल अवश्यमेव मिल जाती है, जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बेशकीमती मनुष्य जीवन दिया है। गुरबाणी-प्रमाण है :

—गुरमुखि गिआनु डोरी प्रभि पकड़ी
जिन खिंचै तिन जाईऐ ॥
हरि गुण गाइ सदा रंगि राते बहुड़ि न पछोताईऐ ॥
भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता निज घरि वासा पाईऐ ॥
(पन्ना ९३५)

—गुरमुखि अकथु कथै बीचारि ॥
गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥
गुरमुखि जपीऐ अंतरि पिआरि ॥
गुरमुखि पाईऐ सबदि अचारि ॥
सबदि भेदि जाणै जाणाई ॥
नानक हउमै जालि समाई ॥२९ ॥ (पन्ना ९४१)

२९वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने इस तथ्य को उजागर किया है कि गुरमुख व्यक्ति गृहस्थी होते हुए भी अपने समस्त दायित्व निभा कर जीवन रूपी बाजी जीत जाते हैं, क्योंकि शबद-गुरु के माध्यम से प्रेमा-भक्ति में लीन रहकर अपना आचरण सर्वोत्तम बना लेते हैं और अहंकार-विहीन हो जाते हैं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरमुख व्यक्ति अकथनीय प्रभु (जिसका स्वरूप कथन से परे हो) के गुण कथन करता है। यह

मुमकिन हो पाता है गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलकर, गुरु की विचार से जुड़ कर। अकथनीय प्रभु का सही स्वरूप कोई बयान नहीं कर सकता। परमेश्वर का गुणगान गुरू-दर्शाये मार्ग पर चल कर, गुरु-चिन्तन से जुड़ कर सहजता से सम्भव हो जाता है। इसके फलस्वरूप गुरमुख व्यक्ति गृहस्थी होते हुए भी समस्त दायित्व निभाता हुआ जीवन रूपी बाजी जीत जाता है। गुरमुख बनकर, गुरु के सम्मुख होकर हृदय-घर में प्रेम-भाव से प्रभु का सिमरन करता है। गुरु-शबद के माध्यम से उसका आचरण ऊंचा बनता है, जिसके फलस्वरूप प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। शबद के गूढ़ रहस्य का अनुभव प्राप्त कर वह स्वयं भी इसे समझ जाता है तथा औरों को भी समझाता है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरमुख-जन अपने अहंकार को जला कर प्रभु में लीन हो जाते हैं।

इस पउड़ी में गुरु पातशाह गृहस्थ धर्म की प्रधानता और गुरमुख की अवस्था का जिक्र करते हुए बयान करते हैं कि गुरमुख व्यक्ति अपने साथ अन्य लोगों का भी उद्धार करने के योग्य हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने जपु जी साहिब पावन बाणी के सलोक में भी इस तथ्य को उजागर किया है कि जिन्होंने नाम की कमाई की है वे अपनी जीवन रूपी बाजी जीत जाते हैं और दूसरों का भी उद्धार कर जाते हैं :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥ (पन्ना ८)

—गुरमुखि धरती साचै साजी ॥
तिस महि ओपति खपति सु बाजी ॥
गुर कै सबदि रपै रंगु लाइ ॥
साचि रतउ पति सिउ घरि जाइ ॥
साच सबद बिनु पति नही पावै ॥
नानक बिनु नावै किउ साचि समावै ॥३० ॥

(पन्ना ९४१)

३०वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने मनुष्य के जीवन के मूल उद्देश्य को समझाया है कि परमेश्वर ने इस जगत की रचना इसलिए की है कि मनुष्य सतिगुरु के शबद के माध्यम से प्रभु से प्यार का नाता जोड़ कर गुरमुख बने और इस संसार से मान-सम्मान प्राप्त करके जाये।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि सच्चे परमेश्वर ने इस संसार की रचना इसलिए की है कि यहां गुरमुख-जन पैदा हों अर्थात् प्रभु ने गुरमुख मनुष्य पैदा करने हेतु यह धरती बनाई है। इस धरती पर उत्पत्ति एवं विनाश (जन्म एवं मृत्यु) प्रभु की एक लीला है। जब मनुष्य सतिगुरु के शबद द्वारा परमेश्वर से प्यार जोड़ कर, प्रभु के रंग में रंग कर अर्थात् लीन होकर सम्मानपूर्वक अपने घर जाता है तब उसके आवागमन (जन्म-मरण) का खेल समाप्त हो जाता है। सच्चे शबद के बिना जीव मान-सम्मान हासिल नहीं कर सकता। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर के नाम के बिना जीव सत्य में लीन कैसे हो सकता है? तात्पर्य हरगिज नहीं हो सकता।

गुरबाणी में जीवात्मा को जीव-स्त्री के रूप में और परमात्मा को प्रियतम-पति के रूप में दर्शाया गया है। सबके लिए यह संसार मायका घर है। एक न एक दिन प्रभु-पति के घर जाना ही है। उसे मायके घर में इस तरह के गुणों को आत्मसात

करके ही प्रभु-पति के घर जाना शोभा देता है, ताकि वहां भी उसे पूरा मान-सम्मान प्राप्त हो सके। इस सन्दर्भ में पंचम पातशाह का पावन शबद यहां उल्लेखनीय है :

पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥
गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥३ ॥
सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥
नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥

(पन्ना ५०)

अर्थात् हे जीवात्मा! जितना समय तू संसार रूपी घर में है, तू पति रूपी परमात्मा का स्मरण करती रह। तभी तू ससुराल (परलोक) में जाकर सुख से बस सकेगी। ज्ञानवान व्यक्तियों से मिल कर तू जीवन जीने का ढंग सीख, अच्छा आचरण बना, तो तुझे कभी भी दुख नहीं सहना पड़ेगा। सबको ससुराल जाना है, सबका गौना (मुकलावा) होना है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि वे जीव-स्त्रियां सौभाग्यवती होती हैं जिनका प्रियतम प्रभु से गहरा प्यार बन जाता है।

गुरमुखि असट सिधी सभि बुधी ॥
गुरमुखि भवजलु तरीऐ सच सुधी ॥
गुरमुखि सर अपसर बिधि जाणै ॥
गुरमुखि परविरति नरविरति पछाणै ॥
गुरमुखि तारे पारि उतारे ॥
नानक गुरमुखि सबदि निसतारे ॥३१ ॥ (पन्ना ९४१)

३१वीं पउड़ी में गुरमुख व्यक्ति के शुभ लक्षणों को विस्तारपूर्वक समझाते हुए गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलना ही समस्त आठों करामाती ताकतों एवं सम्पूर्ण बुद्धिमत्ता की प्राप्ति है। गुरमुख बन कर आठों सिद्धियां तथा सब प्रकार की बुद्धियां प्राप्त होती हैं। गुरु के सम्मुख हो जाने के परिणामस्वरूप संसार रूपी भवसागर से पार उतारा हो जाता है, क्योंकि गुरु के सम्मुख होने से सत्य की समझ आ जाने के फलस्वरूप ही भवसागर से पार उतरा जा सकता है। गुरमुख व्यक्ति ही अच्छे-बुरे अवसर एवं उसकी विधि को जानने वाला हो जाता है अर्थात् गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अच्छे और बुरे वक्त एवं हालात को जान-पहचान लेता है। गुरमुख व्यक्ति ही प्रवृत्ति और निवृत्ति का मार्ग पहचान लेता है। प्रवृत्ति (ग्रहण करने योग्य)-निवृत्ति (त्यागने योग्य) कहने से अभिप्राय, गुरु के वचनों के अनुसार चलने वाले व्यक्ति को गूढ़ रहस्य समझ आ जाता है कि कौन-से कर्म उसके करने योग्य हैं और कौन-से कर्म त्यागने योग्य हैं। गुरमुख व्यक्ति स्वयं तो (भवसागर से) पार उतरता ही है, दूसरों को भी (भवसागर से) पार उतरवा देता है। गुरु पातशाह अन्तिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि गुरमुख व्यक्ति शबद के माध्यम से ही यह सब करने के योग्य बनता है।

३१वीं पउड़ी में एक गूढ़ रहस्य का उद्‌घाटन गुरु साहिब द्वारा हुआ, जिसके परिणामस्वरूप कोई भी व्यक्ति गुरु-रहमत से गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलते हुए करने योग्य कर्म अर्थात् जो इन्सान को इन्सानियत के नाते करने शोभा देते हैं, उन्हें करते हुए और जो उसे शोभा नहीं देते, उनका मन-वचन-कर्म से त्याग कर वह अपना

बेशकीमती जीवन सफल बनाता है। साथ ही दूसरों के लिए भी उसका जीवन मिसाल बन जाता है। वह दूसरों के जीवन को भी सफल बनाने में अमूल्य योगदान प्रदान करता है।

उपरोक्त पउड़ी में जिन आठ सिद्धियों का वर्णन आया है, जिन्हें करामाती ताकतें भी कहा जाता है, उनका संक्षिप्त परिचय भी यहां उल्लेखलीय है :—

अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्रापती, प्राकामय, ईशिता, वशिता, जिनका अभिप्राय इस प्रकार है :—

अणिमा— दूसरे का रूप हो जाना

महिमा— शरीर को बड़ा कर लेना

लघिमा— शरीर को सूक्ष्म रूप कर लेना

गरिमा— भारी हो जाना

प्रापती— मनवांछित पदार्थ हासिल कर लेना

प्राकामय— औरों के दिल की जान लेने का सामर्थ्य

ईशिता— अपनी इच्छानुसार दूसरों को प्रेरित कर लेना

वशिता— सबको वश में कर लेना।

वस्तुत: गुरबाणी में रिद्धियों-सिद्धियों को नाम जपने वालों की दासी बताया गया है। साथ ही गुरबाणी में रिद्धियां-सिद्धियां तो मन का मोह हैं, जिसके कारण प्रभु का नाम हृदय में नहीं बसता। इसके विपरीत गुरु की सेवा से मन निर्मल होता है तथा अज्ञान का अंधकार मिट जाता है। गुरबाणी का फरमान है :

रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ॥
गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु अंधेरा जाइ ॥

(पन्ना ५९३)

यही नहीं, गुरबाणी में तो यह भी स्पष्ट है कि रिद्धियां-सिद्धियां गुरु के सहज सुख के स्वभाव के कारण भक्त-जनों के चरणों में पड़ी रहती हैं, यथा :

रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥ *(पन्ना ६३७)*

गुरबाणी में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इस सन्दर्भ में सुखमनी साहिब में गूढ़ रहस्य का उद्‌घाटन किया है कि प्रभु-सिमरन सर्वोत्तम है और उसी में रिद्धियां-सिद्धियां-नव निधियां विद्यमान हैं। प्रभु-सिमरन में ही ज्ञान, ध्यान और तत्व को समझने वाली विवेक बुद्धि प्राप्त होती है। गुरबाणी का फरमान है :

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥

(पन्ना २६२)

सतिगुरु की अपार कृपा-दृष्टि से प्रभु-सिमरन की सर्वोत्तम दात प्राप्त होती है और इसी में लोक-परलोक के समस्त सुख समाहित हैं। वाहिगुरु रहमत करें और हमें भी सर्वोत्तम खजाना— प्रभु-सिमरन नसीब हो जाये।

खबरनामा

अमेरिकी सैनेट की तरफ से सिक्खों के लिए प्रशंसा प्रस्ताव का भाई लौंगोवाल ने किया स्वागत

श्री अमृतसर : १८ नवंबर : अमेरिकी सैनेट की तरफ से सिक्खों के लिए प्रशंसा प्रस्ताव पारित करने का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स्वागत किया है। वर्णनीय है कि अमेरिका की संसद के ऊपरी सदन सैनेट में सिक्खों के सम्मान में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया है। इसमें श्री गुरु नानक देव जी के ५५०वें प्रकाश पर्व के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को भी विशेष तौर पर दिखाया गया है। प्रस्ताव के माध्यम से सिक्खों के योगदान की भी प्रशंसा की गयी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने कहा कि सिक्ख पूरे विश्व में अपनी मेहनत और लियाकत के साथ बुलंदियों को छू रहे हैं। ये अपने गुरु साहिबान की विचारधारा और सिक्ख मर्यादा के अनुसार हर एक के साथ सहयोग रखते हैं। आज कई विकसित देशों में सिक्ख सरकारों का हिस्सा होने के साथ-साथ विभिन्न उच्च ओहदों तक भी पहुंचे हुए हैं। विदेशों में कारोबारी सिक्खों की भी सूची लम्बी है। सेवा-सिमरन की परंपरा के वारिस सिक्ख हर मुश्किल घड़ी में मानवता की मदद में आगे रहे हैं। अमेरिका की तरफ से सिक्खों के योगदान की प्रशंसा करना गुरु साहिब की गौरवमयी विरासत और विचारधारा का सम्मान है।

भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल लगातार तीसरी बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान बने

श्री अमृतसर : २७ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य कार्यालय तेजा सिंघ समुंदरी हाल में हुए सालाना जनरल इजलास के दौरान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का लगातार तीसरी बार प्रधान चुन लिया गया। उनका यह चयन सर्वसम्मति से हुआ। भाई लौंगोवाल के चयन को समूचे हाऊस की तरफ से जैकारों की गूंज में स्वीकृति दी गई। वर्णनीय है कि भाई लौंगोवाल २९ नवंबर, २०१७ ई. को पहली बार और १३ नवंबर, २०१८ ई. को दूसरी बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान बने थे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में हुए जनरल इजलास के दौरान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल के प्रधान पद पर चयन के पश्चात भाई रजिंदर सिंघ महिता को वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुना गया। कनिष्ठ उपाध्यक्ष के लिए स. गुरबख़्श सिंघ नवां शहर चुने गए हैं। स. हरजिंदर सिंघ (धामी) को महासचिव चुन लिया गया।

जनरल इजलास के दौरान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने कार्यकारिणी के ११ सदस्यों का नाम पेश किया, जिनको उपस्थित सदस्यों ने जैकारों की गूंज में स्वीकृति प्रदान की। कार्यकारिणी कमेटी के चुने गए सदस्यों में स. भुपिंदर सिंघ असंध, स. जगसीर सिंघ मांगेआणा (डब्बवाली), स. गुरपाल सिंघ गोरा, स. शेर सिंघ मंडवाला, बीबी परमजीत कौर लहिरा, स. जसमेर सिंघ लाछड़ू, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, स. सुरजीत सिंघ (कंग- राजस्थान) स. इंदरमोहन सिंघ लखमीरवाला, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, बीबी कुलदीप कौर टौहड़ा के नाम शामिल हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास के दौरान पास किये गए अहम प्रस्ताव

श्री अमृतसर : २७ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास के दौरान कुछ विशेष प्रस्ताव पास किये गए। इनमें पंजाबी मातृ-भाषा के सम्मान के लिए प्रस्ताव, करतारपुर साहिब के खुले रास्ते और श्री गुरु नानक देव जी के ५५०वें प्रकाश पर्व के लिए धन्यवाद प्रस्ताव, काली सूची ख़त्म करने से सम्बन्धित तथा विदेशों में सिक्खों पर हो रहे नस्ली हमलों आदि से सम्बन्धित प्रस्ताव शामिल हैं।

पंजाबी मातृ-भाषा से सम्बन्धित पास किये गए प्रस्ताव में पंजाब और चंडीगढ़ में पंजाबी भाषा के साथ हो रहे भेदभाव का ख़ास ज़िक्र करते हुए पंजाबी को सम्मानयोग्य रुतबा देने की मांग की गई। ५५०वें प्रकाश पर्व के अवसर पर पंजाब सरकार की तरफ से प्रमुख शख़्सियतों को सम्मानित करते समय पंजाबी मातृ-भाषा से बेमुख होते हुए अंग्रेज़ी में सम्मान-पत्र देने की निंदा की गई। पंजाब सरकार को पंजाब के सभी सरकारी दफ्तरों में काम-काज को पंजाबी भाषा में यकीनी बनाने की मांग की गई। प्रस्ताव के माध्यम से भारत सरकार से भी मांग की गई कि पंजाब के साथ लगते हरियाणा, हिमाचल और दिल्ली सहित अन्य पंजाबी जनसंख्या वाले राज्यों में पंजाबी भाषा को उचित मान-सम्मान दिलाने के लिए विशेष प्रयत्न किये जाएं।

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब करतारपुर साहिब पाकिस्तान के खुले रास्ते के लिए भारत और पाकिस्तान सरकार के धन्यवाद का प्रस्ताव भी पारित किया गया। इस प्रस्ताव के माध्यम से दिवंगत स. कुलदीप सिंघ वडाला द्वारा किये गये यत्नों की प्रशंसा करते हुए करतारपुर साहिब के दर्शन के लिए जाने वाली संगत के लिए प्रक्रिया सरल बनाने की भी अपील की गई।

इजलास के दौरान एक प्रस्ताव के माध्यम से श्री गुरु नानक देव जी के ५५०वें प्रकाश पर्व को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने में सहयोग देने वालों का धन्यवाद किया गया। प्रस्ताव के माध्यम से ५५०वें प्रकाश पर्व के अवसर पर भारत सरकार की तरफ से डाक टिकटें और सिक्के जारी करने, विभिन्न दूतावासों में समागम करवाने और ९० के करीब देशों के राजदूतों को श्री दरबार साहिब के दर्शन करवाने के लिए धन्यवाद किया गया। इसके अलावा एक अन्य प्रस्ताव के माध्यम से देश की विभिन्न जेलों में लंबे समय से नज़रबंद सिक्खों की रिहाई के लिए भारत सरकार की तरफ से किये गए फ़ैसले का धन्यवाद किया गया। इसके साथ ही रहते शेष नज़रबंद सिक्खों की रिहाई भी मांगी गई। काली सूची हटाने से सम्बन्धित भारत सरकार द्वारा लिए गए फ़ैसले का भी एक प्रस्ताव के माध्यम से स्वागत करते हुए धन्यवाद किया गया।

एक विशेष प्रस्ताव पारित करते हुए भारत सरकार से श्री गुरु नानक देव जी से सम्बन्धित गुरुद्वारा हरि की पौड़ी हरिद्वार, गुरुद्वारा डांगमार और चुंगथांग (सिक्किम), गुरुद्वारा बावली मठ, मंगू मठ एवं पंजाबी मठ जगन्नाथपुरी उड़ीसा का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को देने की मांग की गई, जिससे इनकी सेवा-संभाल सिक्ख मर्यादा के अनुसार हो सके।

जनरल हाऊस द्वारा एक प्रस्ताव के माध्यम से पंजाब के वातावरण के प्रदूषित होने, खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट तथा इनके मानव-स्वास्थ्य पर पड़ रहे बुरे प्रभाव पर चिंता प्रकट की गई। इस प्रस्ताव के माध्यम से पंजाब निवासियों को अपनी विरासत के मद्देनज़र कुदरती ढंग से खाने-पीने के साधनों को पुनः उत्साहित करने की अपील की गई। पंजाब सरकार से खाने-पीने वाली वस्तुओं में मिलावटखोरी के ख़िलाफ़ सख़्त कानून बनाने की मांग करते हुए कुदरती वातावरण की संभाल के लिए यत्न करने की अपील भी की गई।

एक विशेष प्रस्ताव के माध्यम से शिरोमणि गुरुद्वारा

प्रबंधक कमेटी की तरफ से सिक्ख एजूकेशनल सोसायटी चंडीगढ़ को दी गई १६ एकड़ १४ मरले ज़मीन से सम्बन्धित विभिन्न प्रस्तावों को रद्द करते हुए सिक्ख एजूकेशन सोसायटी से ज़मीन प्राप्ति के लिए कानूनी कार्यवाही करने का फ़ैसला किया गया।

एक प्रस्ताव के माध्यम से १९८४ ई. की सिक्ख नसलकुशी की सख़्त शब्दों में निंदा की गई। जून और नवंबर, १९८४ ई. में सिक्ख कत्लेआम की निंदा करते हुए दिल्ली, कानपुर, बुकारो आदि शहरों में केंद्र सरकार की शह पर सिक्खों के कत्लेआम के लिए दोषियों को ३५ वर्ष का समय बीतने पर भी सज़ा न मिलने का ज़िक्र करते हुए सभी दोषियों को सज़ा देने की मांग की गई। सोशल मीडिया पर आए दिन गुरु साहिबान, सिक्ख योद्धाओं और सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित विवादित पोस्टों पर सख़्ती के साथ रोक लगाने की भी भारत सरकार से मांग की गई। इस सम्बन्ध में अलग और प्रभावशाली कानून बनाने की अपील करते हुए संसद में शामिल सिक्ख सांसदों को इस मामले को ज़ोरदार ढंग से उठाने की भी अपील की गई।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास में अलग-अलग देशों में बसते सिक्खों से सम्बन्धित मसलों और सिक्ख पहचान से सम्बन्धित मुश्किलों के हल के लिए अलग-अलग देशों की प्रमुख शख़्सियतों का ५१ सदस्यीय सलाहकार बोर्ड गठित करने की स्वीकृति देने का भी प्रस्ताव पारित किया गया। इस बोर्ड के प्रमुख शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान होंगे। सलाहकार बोर्ड की एक वर्ष में कम से कम दो सभाएं की जाएंगी।

एक अन्य प्रस्ताव के माध्यम से विदेशों में सिक्खों पर होते नफ़रती हमलों की भी निंदा की गई। इस प्रस्ताव के माध्यम से अफगानिस्तान में सिक्खों को जबरन धर्म तबदील करने के लिए मजबूर करने की भी निंदा की गई। भारत सरकार से मांग की गई कि वे अपने कूटनीतिक साधनों द्वारा विदेशों की सरकारों के साथ बात करे कि सिक्ख धर्म के विलक्षण अस्तित्व और पहचान पर होते हमले और जबरन धर्म तबदीली की घटनाएं रोकने के लिए उचित यत्न करे।

जत्थेदार अवतार सिंघ के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का मुख्यालय रहा बंद

श्री अमृतसर : २१ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान जत्थेदार अवतार सिंघ के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मौजूदा और पूर्व मुलाजिमों द्वारा तेजा सिंघ समुंदरी हाल में की गई शोक सभा के दौरान उनकी सेवाओं को याद किया गया। इसके बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सहित सभी अदारे बंद रहे। मूल मंत्र और गुरु-मंत्र का जाप कर बिछड़ी रूह को श्रद्धा-सुमन भेंट किये गये। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंघ ने कहा कि जत्थेदार अवतार सिंघ ने धर्म प्रचार के साथ-साथ शिक्षा के विकास के लिए भी अहम योगदान दिया है। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान दो यूनिवर्सिटियों की स्थापना के साथ-साथ अन्य शैक्षिक अदारे स्थापित किए। इनके इलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी मैंबर स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्डु, सचिव स. मनजीत सिंघ, स. अवतार सिंघ व स. महिंदर सिंघ आहली, पूर्व सचिव स. जोगिंदर सिंघ अदलीवाल, स. दिलजीत सिंघ, स. सतबीर सिंघ और स. बलविन्दर सिंघ जौड़ासिंघा ने भी जत्थेदार अवतार सिंघ के निधन पर शोक व्यक्त किया।